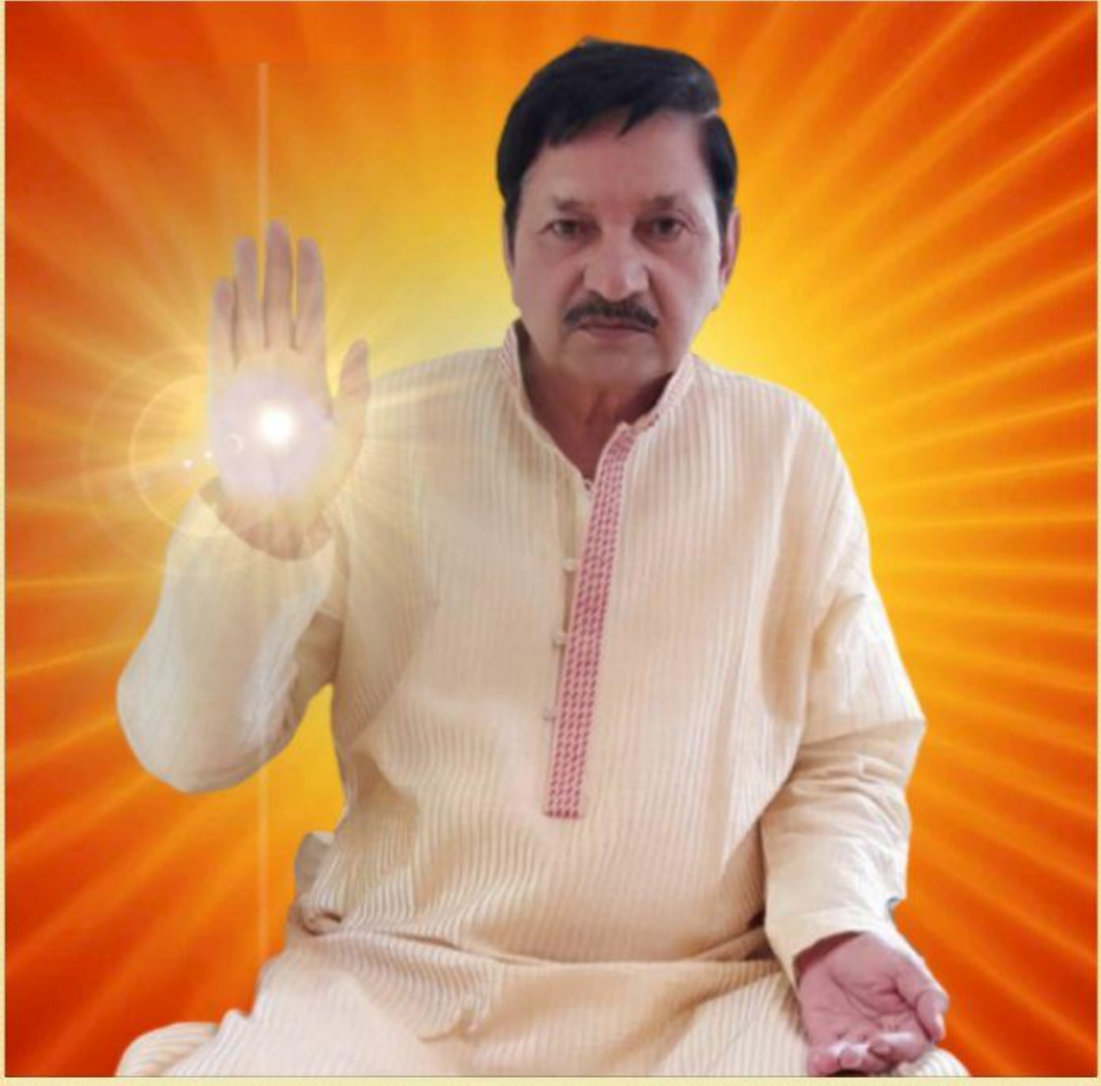


आत्मबोध



परमसन्त सद्गुरु वक्त सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला ,बिसवां , सीतापुर , उत्तर प्रदेश ,भारत

"सुरेशादयाल वाणी"

- परमसन्त सद्गुरु वक्त सुरेशादयाल

❁❁ "नौ द्वार संसार के मान,
दसवां द्वार है मन का मान,
ग्यारवहां द्वार से परमात्मा जान।।" ❁❁

भूमिका

यागवल्क्य ऋषि से उनके शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी संसार में वह कौन सा ज्ञान है जिसे जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता। गुरु जी ने कहा वह ज्ञान है "आत्मज्ञान" जिसे जानने के बाद मनुष्य पूर्ण हो जाता है, ज्ञानी हो जाता है, सन्त हो जाता है, पूर्ण मुक्त हो जाता है, मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। मन, माया, आशा, तृष्णा सब समाप्त हो जाते हैं। संसार में यदि कुछ जानने योग्य है तो वह है आत्मज्ञान।

प्रस्तुत पुस्तक में आत्मज्ञान प्राप्त करने से सम्बंधित सभी आवश्यक जानकारी दी गयी है।

मनुष्य सारी उम्र भ्रम वश मन और माया को ही परमात्मा जानकर उसी की साधना में लगा रहता है। जबकि उसका लक्ष्य परमात्मा के सम्मुख होना और मन और माया से विमुख होना होता है। प्रस्तुत पुस्तक में :-

1. मन और माया की पहचान बताई गयी है।
2. मन, माया, तीन लोक, अनहदनाद, प्रकाश, ध्यान इत्यादि क्रियाएं छुड़ाकर उसे चौथा पद, सत्यपद, परमपद की खोज बताई गयी है।
3. मनुष्य सारी उम्र तनघट और मनघट में ही बिता देता है। उसे "आत्मघट" जो सत्यपद है, परमपद है उसकी जानकारी न होने के कारण वह पूर्ण नहीं हो पाता है। यह आत्मघट न शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है और न ही वह हमें स्पर्श करता है।
4. प्रस्तुत पुस्तक में आत्मज्ञान से सम्बंधित सभी आवश्यक जानकारी मिल जाएगी। इसे पढ़ने के बाद दूसरी पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। फिर भी यदि कोई भ्रम हो तो कृपया पूर्ण गुरु से ही संपर्क करें।

सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान

मोचकला, बिसवां, सीतापुर, उ० प्र०

मो०- 9984257903

विषय सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	माया	5
2.	कर्म,कर्मफल,योग	6
3.	समर्पण	9
4.	द्वैत ,अद्वैत	10
5.	सूक्ष्मशरीर ,ओरा शरीर , अविद्या कैसे मरे , मन कैसे मरे	11
6.	सूक्ष्मशरीर को चार्ज करना, भवसागर , सुख	12
7.	प्रकृति , तीन लोक , नौ खंड	13
8.	शून्य में कैसे रहें , परमात्मा से मिलने की तैयारी।	14
9.	आत्मज्ञान जानने हेतु तैयारी।	15
10.	पिंड , अंड , ब्रह्माण्ड की साधना छोड़नी , चौथे पद की साधना करनी।	16
11.	आत्मज्ञान , अध्यात्म का उद्देश्य	17
12.	निहकर्म साधना , समर्पण	18
13.	सहजता , पूर्ण प्रयासरहित कैसे हों	19
14.	अनंत की साधना , विमुख से सम्मुखता ,इन्द्रियातीत	20
15.	विचारातीत,भावातीत,कर्मातीत,मायातीत, ज्ञानातीत , गुणातीत	21
16.	ध्यानातीत, प्रणातीत , पांच तत्वों से परे , सहज होकर पढ़िए।	22
17.	मन,माया,आशा,तृष्णा कैसे मरे , सुरत कैसे ठहरे , संसार से कैसे अलग हों	23
18.	चौथे पद की साधना से नीचे के सभी पद पार हो जाते हैं , मन और माया को छोड़ना है और सत्य को पकड़ना है	24
19.	अभी तक क्यों नहीं ढूँढ पाए	25
20.	सत्य की खोज	26
21.	कैसे पहचाने	27
22.	परमात्मज्ञान	29 , 30
23.	गुरु कैसा ढूँढे	31

24.	आध्यात्मिक शब्दों की जानकारी	32,33
25.	वैराग्य क्या है, सुरत द्वारा रचना , आत्मा के 16 गुण	34,35
26.	गोविन्द से गुरु बड़ा क्यों	36
27.	तन घट , मन घट , आत्म घट अध्ययन	37-41
28.	आत्म घट	42,43
29.	मन घट	44
30.	तन घट , चौथा पद	45
31.	तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा	46
32.	विवेकी सत्संग	47
33.	परमात्मा को कहाँ और कैसे ढूँढ़ें , करना क्या है , जानना क्या है , खोजना क्या है	48,49
34.	उसको जानने के लिए क्या करें	50
35.	अनहद और सारशब्द में भेद, क्या पिंड,अंड,ब्रह्माण्ड की रचना नकली है	51
36.	गुरु कैसा ढूँढ़े	52
37.	तुम्हारे और गुरु में अंतर , पीव अवस्था में आने के लिये	53
38.	करना क्या है	54
39.	पीव अवस्था क्या है	55-57
40.	कहाँ खोजें	58
41.	क्यों खोजें	59,60
42.	हमारे में क्या परिवर्तन होता है , खोजने में हम गलती कहाँ करते हैं	61,62
43.	केवल एक को ही जानना है , केवल मनुष्य के शरीर में ही आत्मघट	63
44.	आत्मघट कहाँ और कैसा है ,कैसे देखें	64
45.	कैसे प्रकट करें , सहज कैसे हों , प्रकट होने के बाद क्या करें	65
46.	सद्गुरु,गुरु और विद्वान में अंतर, राधास्वामी क्या है	66-68
47.	तीन अवस्था,तीन गुण ,तीन ज्ञान ,दो स्वरूप	69
48.	पीव अवस्था क्या है	70
49.	सभी के पार की अवस्था , रहित अवस्था	71
50.	अतीत अवस्था , पीव अवस्था कैसे प्राप्त हो यह धार	72

	कहाँ है	
51.	वेदांत की भाषा में विराट रूप	73
52.	मन से मुक्ति	74,75
53.	अवस्था परिवर्तन	76,77
54.	धार्मिक और आध्यात्मिक में अंतर ,चेतावनी	78
55.	आत्मा की भक्ति	79
56.	आत्मा की भक्ति आवश्यकता	80
57.	आत्मा की भक्ति से हमारे में क्या परिवर्तन होता है	81
58.	आत्मबोधमाला	82-84
59.	सत्संग श्री सारशब्द	85-87
60.	सारशब्द कविता , माया	88
61.	जीव अवस्था से पीव अवस्था में आना,वैराग्य क्या है	89
62.	परमात्मा की खोज कविता	90
63.	सत्य,मिथ्या,असत्य और माया में अंतर	91
64.	ब्रह्मज्ञान और आत्मज्ञान में अंतर	92,93,94
65.	पहिचान- राधास्वामी	94,95

“प्रथम चरण :-सत्संग”

- (1) आगए सत्संग में संग “सत” का हो गया।
दुर्मति जाती रही गुरु के मत का हो गया ।।
- (2) सिगरी दुर्मति दूर कर, जीवन सफल बनाव।
काग गमन गति छोड़ि के, हंस गमन गति आव ।।
- (3) काग गमन गति और हंस गमन गति:-
जब सुरति आवे देह में, काग रूप तेहि जान ।
जब सुरति उलटै शब्द में, हंस रूप पहिचान ।।
- (4) सत्संग में आना , सत का संग होना , दुर्मति समाप्त होना,
गुरु के मत का होना , हंसगति प्राप्त करना , इन सब के
लिए केवल आत्मज्ञान ही है। बिना आत्मज्ञान के यह सब
नहीं हो सकता है।

आत्मज्ञान के लिए शर्त :-

- मन और माया को छोड़ना है।
- आत्मा के सन्मुख होना है।

दुर्मति :-

सकल अविद्या कर परिवारा, मोह आदि तम पुंज पसारा ।।

(I) अविद्या:

वेदांत की भाषा में अविद्या कहते हैं और योग की भाषा में इसे माया कहते हैं।

(II) माया:

जो यथार्थ में है वैसा नहीं दिखता है।

जैसे:- है रस्सी परंतु भ्रम वश उसे साँप दिख रहा है।

(6) देखना या अनुभव करना :-

- (I) जो बुद्धि से देखता है सब माया है।
- (II) जो इंद्रियों से देखता है सब माया है।
- (III) जो मन से अनुभव करता है सब माया है।
- (IV) अपने से बाहर इन आंखों से जो देखता है वह

सब माया है।

- (V) जो साकार है ,सब माया है।
- (VI) जितने "भाव" हैं ,काम ,क्रोध,
लोभ ,मोह ,अहंकार आदि सब माया है।
- (VII) तीन गुणों वाली सृष्टि भी माया है।
- (VIII) अंदर की तरफ देखना साधना है।
- (IX) जो विवेक से देखता है वह योगी है।

(7) कर्म या कर्म फल :-

- ✧ जितना कर्म हमारे मन पर अंकित होता है , उसी का हमें फल मिलता है।
- ✧ जिस कर्म में हमारा मन जुड़ा नहीं होता है , उसका फल मन की रील पर अंकित ही नहीं होगा , कोई कर्म ही नहीं होगा। तो कोई फल भी नहीं होगा।
- ✧ कर से कर्म करौ विधि नाना,मन राखौ जहाँ कृपा निधाना।
- ✧ हम कोशिश करें की कोई भी नेगेटिव बात न सुने , न देखें , न कहें।
- ✧ यदि कोई भी नेगेटिव बात हम सुने या देखें तो उसका चित्र हमारे मन की रील पर न बनने पाए। ऐसा तभी होगा जब हमारा मन उन बातों में लिप्त न होकर प्रभु में लिप्त हों।
- ✧ कोई भी नेगेटिव बात सुनने के बाद उसके प्रभाव को निम्न प्रकार से नष्ट कर दिया जाता है :-
 - ✓ यदि आपको आत्मबोध हो गया है तो तुरंत आत्मा के सन्मुख हो जावो , वह सब नष्ट हो जायेगा।
 - ✓ यदि आत्मबोध नहीं हुआ है तो सूर्य की तरफ देख कर यह सोचो की वह सब सूर्य में जाकर भष्म हो गया है।
 - ✓ यदि रात है तो आकाश की तरफ देखकर यह सोचो की वह आकाश में जाकर नष्ट हो गया है।

- ✧ इस प्रकार से मन पर कोई भी चित्र न बनने दो , नहीं तो कर्मफल भोगना पड़ेगा।
- ✧ कोई ऐसी बात मत सोचो जिससे मन पर दबाव या खिंचाव पड़े।
- ✧ जो हमारे प्रसन्नता या लाभ की बात हो , उसका चित्र बनने दो उससे तुम्हारा संसार बनेगा। अपने संसार की रचना करने वाले तुम और तुम्हारा मन है।
- ✧ जो भी हम मन में सोचेंगे, वह कर्म बन जायेगा उसका फल हमें भोगना पड़ेगा। जैसे यदि हम किसी को मारने की बात मन में सोचे और उसको मारे भी नहीं फिर भी वह मन की रील पर अंकित हो जायेगा और कर्म बन जायेगा ऐसे कर्मों से हमें बचना है।
- ✧ इन्द्रियों द्वारा चाहे जितनी भी पूजा कर लो, वह कर्म नहीं बनेगा, हमारे मन की रील पर अंकित नहीं होगा और उसका कोई फल हमको नहीं मिलेगा।
- ✧ अनन्य होने का अर्थ है कि हम माया बद्ध एरिया में न हो, चाहे वह सात्विक हो, चाहे राजस हो, चाहे तामस हो, चाहे देवता हों, चाहे मनुष्य हो, चाहे राक्षस हो। इन तीन गुणों से संबधित चाहे कोई मनुष्य हो, चाहे कोई सामान हो, हम इनमें लिप्त न हो।
- ✧ जिसको एक बार परमात्मा की प्राप्ति हो गयी या भगवत प्राप्ति हो गयी, फिर यदि तुम परमात्मा को हटाना भी चाहो तो कभी भी नहीं हटेगा। तुम्हारा कोई उपाय हटाने में नहीं चलेगा, क्योंकि सभी इन्द्रियाँ और मन परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।
- ✧ कोई भी साधना ऐसी नहीं है जिसके बल पर हम उस परमात्मा को प्राप्त कर सके, वह साधन हीन, बलहीन को ही मिलते है।

(8) योग की आवश्यकता:-

भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन आमने सामने खड़े हैं फिर भी कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि तुम हमें इन आंखों से नहीं देख सकते जो स्वरूप हमारा तुमको दिख रहा है यह असली स्वरूप नहीं है, हमें देखने के लिए ज्ञान चक्षु की आवश्यकता है। इसके लिए तुम योग करो। अर्जुन, कृष्ण से पूछते हैं- योग तो बहुत से हैं, मैं कौन-सा योग करूँ:-

(I) कर्म योग:-

सभी कर्म अकर्ता होकर करो ,कर्म करो फल की इच्छा मत करो।

(II) समत्व बुद्धि योग:-

ज्ञान के द्वारा बुद्धि को स्थिर करो।

(III) अनाशक्ति योग:-

बुद्धि स्थिर होगी तो कामनाओं की आशक्ति नहीं होगी।

(IV) ज्ञान योग:- विचारातीत और भावातीत होना ।

(V) ज्ञान विज्ञान योग:- अंदर में प्रकाश को देखना है।

(VI) सांख्य योग:-

(i) आत्मा को अकर्ता के रूप में देखना होता है।

(ii) आत्मा को चित्त से अलग शुद्ध रूप में देखना होता है।

कृष्ण जी कहते हैं-

“ हे! अर्जुन तुम सब कुछ छोड़कर केवल मुझे समर्पित हो जाओ।”

अर्जुन कहते हैं-

मैं समर्पित कैसे हो जाऊँ -

समर्पण:-

- ✧ प्रेम करो।
- ✧ जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो।
- ✧ प्रेम से आंखें खुल जाती हैं।
- ✧ ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।
- ✧ प्रेम का बड़ा रूप भक्ति है।
- ✧ भगवान भक्त के पीछे पीछे चलते हैं।
- ✧ प्रेम से परम प्रेम तक पहुँचना है।
- ✧ परम प्रेम वह है जो सदैव एक सा रहता है ,
जिसमे द्वैत नहीं है। द्वैत में सदैव दोनों पक्ष रहते हैं।

द्वैत :-

द्वैत का "अर्थ" दो है और अद्वैत का अर्थ "एक" है। यह संसार द्वैत से बना है यहाँ हर चीज़ के दोनों पहलू हैं।
जैसे : "सुख-दुःख ", "दिन-रात " , "ऊपर-नीचे " , "पाप-पुण्य", "सोना-जागना " , "लाभ-हानि " , "पश-अपशय",
इत्यादि।

- (i) जो सुना रहा है और जो सुन रहा है द्वैत है।
- (ii) जो देख रहा है और जिसको देख रहा है द्वैत है।
- (iii) आवाज को मन सुन रहा है द्वैत है।
- (iv) मन का गुरु शब्द गुरु है द्वैत है।

अद्वैत:-

अद्वैत केवल आत्मा ही है , जिसका ज्ञान केवल आत्मज्ञान से ही हो सकता है। इसमें दो नहीं है। वही शिष्य है ,वही सतगुरु है , वही आत्मा है,वही परमात्मा है , सब एक ही है। परम सहजता में रहना अतः हमारी मंजिल द्वैत से अद्वैत तक है।

"सूक्ष्म शरीर "

सूक्ष्म शरीर 17 घटकों से मिलकर बना है। यह सूक्ष्म शरीर ही पुनर्जन्म का कारण है, क्योंकि सूक्ष्म शरीर में मन प्रधान है, उसकी वासना नहीं मरती है। मनुष्य जन्म लेता है, मरता है फिर जन्म लेता है। इस प्रकार जन्म-मरण का यह चक्र चलता रहता है, क्योंकि न अविद्या मरती है और न ही मन अर्थात् इन्द्रियजनित वासनाएं मरती है। इसी कारण वह हर जन्म में 'आशा-तृष्णा' में फंसा रहता है। वस्तुतः 'अविद्या' ही हमारे दुःख का एकमात्र कारण है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। 'पतंजलि योगसूत्र' में कहा गया है कि ये पंचक्लेश ही पांच बंधनों के समान हमें इस संसार में बांधे रखते हैं। इनमें से अविद्या ही कारण है और शेष चार क्लेश इसके कार्य हैं। बाह्य एवं अंतः प्रकृति को वशीभूत करके अपने इस आत्मबोध को व्यक्त करना ही जीव का परम लक्ष्य है, जिसे वह अविद्या के कारण भूल गया है। अविद्या के बंधन से छूटकर ही हम जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पा सकते हैं।

ओरा शरीर:-

मूल शक्ति का संचालन करने वाला है 'सूक्ष्म शरीर'। इसे 'तेजस शरीर' भी कहा गया है और इसे 'औरा' भी कहते हैं। 'औरा' वैदिक सिद्धांत का अद्वितीय विज्ञान है और इसका आध्यात्मिकता से सीधा संबंध है। यह शरीर के चारों ओर प्रकाशमय ऐसा अदृश्य आभावृत्त है जो व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को परिभाषित करता है।

अविद्या कैसे मरे, मन कैसे मरे:-

❖ नौ द्वार संसार के छोड़ कर ग्यारहवां द्वार गुरु से मिलकर जान लो।

- ✧ गुरु से मिलकर परमात्मा प्रकट करा लो।
- ✧ यही आत्मज्ञान है , आत्मज्ञान होने पर अविद्या और मन मर जाते हैं।

सूक्ष्म शरीर को चार्ज करना है (ब्रह्मज्ञान के अनुसार “सीव” अवस्था) :-

- ✧ मन को वर्तमान में रखना है। मन का स्विच ऑफ कर दो। विद्युत् तरंगें निकलने लगेंगी।
- ✧ हृदय केंद्र पर प्रेम उमगावो , चुम्बकीय तरंगें निकलने लगती हैं। चुम्बकीय फील्ड बन जाएगी।
- ✧ इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड से अपना सूक्ष्म शरीर चार्ज करते रहो। यही सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर को चलाता है ।
- ✧ जो काम करना हो मन का स्विच ऑफ़ कर करो।

भवसागर :-

मन और माया ही भवसागर हैं। इनसे पार निकलना है। पार निकलने के लिए केवल आत्मज्ञान ही है।

सुख :-

प्रवृत्ति और रूचि के अनुसार मिलता है। सभी की प्रवृत्ति चाहे जैसी भी हो सभी की कामना सुख प्राप्त करने की होती है, परंतु सुख प्राप्त करने के ढंगसबमें अलग-अलग होते हैं ।
जैसे:-

- ✧ सतोगुण वाले दूसरों का परोपकार करने में

- ✧ रजोगुण वाले ठाठ, बाठ, ऐशो आराम में सुख देखते हैं।
- ✧ तामसी प्रवृत्ति वाले को दूसरे को हानि पहुंचा कर ईर्ष्या-द्वेष से काम बिगाड़ कर सुख मिलता है।
- ✧ संसारी - सोचता है सुख बाहर से मिलेगा
- ✧ सन्यासी - सोचता है सुख अंदर से मिलेगा।
- ✧ ज्ञानी -
 सोचता है सुख की धारा अपने आप अंदर से आ रही है।
 “ सभी के रास्ते अलग-अलग हैं ”
परिवर्तन प्रकृति का नियम है:-

- (1) जो हम करते हैं उसका Reaction ही प्रकृति है।
- (2) आनंदमय कोष के आगे अपवर्ग आता है उसके आगे मोक्ष है जहां चित्त पूर्ण रूप से लय हो जाता है चित्त जब लय हो जाएगा तब मोक्ष है।
- (3) प्रकृति में तीन लोक और नौ खंड हैं। :-

1) पहला लोक :-

- ✧ पृथ्वी तत्त्व
- ✧ जल तत्त्व
- ✧ अग्नि तत्त्व

2) दूसरा लोक :-

- ✧ १) हवा
- ✧ २) प्रकाश
- ✧ ३) शब्द

3) तीसरा लोक:-

- ✧ सूरज

✧ चाँद
✧ सितारे

“तीन लोक नौ खंड में गुरु से बड़ा न कोय।

कर्ता करे न करि सकै गुरु करे सो होय।।”

कर्ता प्रकृति है।

“जीव नियम के वस रहे , नियम प्रकृति अनुरूप।

प्रकृति भी जाके वस रहे , सोई कहावै भूप ।।”

“ शून्य में कैसे रहें ” :-

1:- पहला चरण है शरीर शून्यता, यह कैसे हो

✧ हम कुछ कहते हुए भी कुछ नहीं कह रहे हैं देखते
हुए भी कुछ नहीं देख रहे हैं सुनते हुए भी कुछ नहीं सुन
रहे हैं।

✧ गोरखनाथ जी ने जो अपना अनुभव बताया
“जीवित मरिए भवजल तरिए” ऐसा जियो कि हम हैं
ही नहीं। समता भाव में जियो।

✧ तीन शून्य में रहना है,
“शरीर-शून्यता, विचार-शून्यता, भाव-शून्यता”।

परमात्मा से मिलने की तैयारी, उद्देश्य :-

गुणातीत, विचारातीत, इंद्रियातीत, प्राणातीत,
ज्ञानातीत, कर्मातीत, भावातीत, पांच तत्वों से
परे, मायातीत, वह सबमें है, उसमें कोई नहीं,

जैसे: नदियां समुद्र में मिलकर अपना अस्तित्व समाप्त कर देती
हैं,

"गांव की गंदी नाली गंगा से जाकर जब मिली।
फिर नहीं गंदी नाली वह, गंगा माई बन गयी ।।"

करना क्या है :-

- ✧ विचार पॉजिटिव करना सीखें ।
- ✧ खूब प्रसन्न रहना सीखें ।
- ✧ हृदय केन्द्र को जगाने के लिए प्रेम उमगाना सीखे ।
- ✧ प्रशंसा करना सीखें।
- ✧ मन को विचारतीत करना है।
- ✧ पकड़ना केवल परमात्मा को है बाकी सब छोड़ना है।
- ✧ आत्मज्ञान ही सार है , आत्मा को पहचानना है।
- ✧ मनमुखी से हटकर परमात्ममुखी होना है।
- ✧ आत्मज्ञानी , परमात्मज्ञानी गुरु की खोज करनी है।
- ✧ देह भक्ति छोड़कर विदेह भक्ति करनी है।
- ✧ अलख को लखना है।
- ✧ परम की साधना करनी है। जैसे परमप्रेम , परमशान्ति , परमआनंद , परम तत्व इत्यादि।
- ✧ सम्मुख होना सीखें।
- ✧ पूर्ण सहजता सीखना है।
- ✧ पूर्ण समर्पण (मन का) परमात्मा को कर देना है।
- ✧ अनन्य होना है।
- ✧ भक्ति आत्मा की करनी है।

आत्मज्ञान जानने हेतु तैयारी :-

- ✧ बोली में परिवर्तन :- हमारी बोली सार्थक , मीठी , सारगर्भित , सटीक , उपयुक्त होनी चाहिए। कोई भी शब्द ऐसे न हो जिनका वहां पर कोई प्रयोजन न हो। बोली गागर में सागर की तरह होनी चाहिए।

✧ शिवसकल्पमस्तु :-

- हमारे विचार पॉजिटिव होने चाहिए।
- हमारे भाव पॉजिटिव होने चाहिए। हमारे भावों में प्रेम और प्रसन्नता होनी चाहिए।

✧ स्वभाव में परिवर्तन :-

- स्वभाव में दयाभाव , परोपकार , नम्रता इत्यादि होने चाहिए।
- ✧ कथनी , करनी , रहनी में समता होनी चाहिए।
- ✧ अंदर और बाहर से एक होना चाहिए।
- ✧ उपरोक्त परिवर्तन गुरु देखकर "आत्मबोध" करा देता है।

✧ आत्मबोध में परमात्मा :-

- प्रकट कराया जाता है।
- लखाया जाता है।
- सन्मुख कराया जाता है।
- हम परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।

पिंड , अंड , ब्रह्माण्ड , तीन लोकों की साधना छोड़नी है:-

शरीर के चक्रों की साधना , ध्यान , प्रकाश , अनहदनाद की साधना , पांच तत्वों की साधना , इन्द्रियों द्वारा साधना यह सब मन की ही साधना है। इस सब को छोड़ना है।

केवल चौथे पद , आत्मा की ही साधना करनी है :-
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा , सत्यनाम सतगुरु गति चीन्हा।

केवल आत्मा ही सत्य है , केवल इसी को जानना है और इसी से एक हो जाना है।

द्वितीय चरण : “आत्मज्ञान”

जय जय सुरनायक , जन सुखदायक , प्रनतपाल भगवंता ।
जो सहज कृपाला , दीन दयाला, करहु अनुग्रह सोई ।
अविगत गोतीतं , चरित पुनीतं , मायारहित मुकुन्दा ।
सो करउ अघारी , चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा ॥

जो भव भय भंजन , मुनि मनरंजन , गंजन विपति वरूथा ।
मन, वच, क्रम, वाणी छाड़ि सयानी , सरन सकल सुर जूथा ।
सारद , श्रुति , शेषा , रिषय , अशेषा , जा कहु कोई नहीं जाना ।
जेहि दीन पिआरे , बेद पुकारे , द्रवउ सो श्री भगवाना ॥

आत्मज्ञान :-

आत्मज्ञान बिना नर भटकै , कोई मथुरा कोई काशी ॥
मथुरा हमारा मन , काशी हमारा शरीर है ।
आत्मज्ञान द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार होता है , इसमें पूर्ण प्रयासरहित होकर , पूर्ण सहज होकर , निहकर्म साधना होती है ।

अध्यात्म का उद्देश्य :-

- ✧ "जीव" मन की डाल पर बैठा है यहाँ से उड़ कर इसे आत्मा की डाल पर बैठ जाना है ।
- ✧ न कहीं आना , न कहीं जाना आपै में आप समाना ।

- ✧ सबकी शरण में घूम कर आखिरकार अपनी शरण में आना है।
- ✧ अभी हम मन द्वारा संचालित है , आत्मज्ञान होने पर हम आत्मा द्वारा संचालित हो जाते है।
- ✧ अभी तुम्हारा सारथी मन है , आत्मज्ञान होने पर तुम्हारा सारथी परमात्मा हो जाता है।
- ✧ आत्मा परमतत्व की है , इसीलिए उसे परमात्मा कहते हैं।
आत्मा और परमात्मा दो नहीं है ,नहीं तो द्वैत हो जायेगा।
- ✧ संसार का सबसे बड़ा ज्ञान आत्मज्ञान है।
- ✧ आत्मज्ञान होने के बाद जीव पूर्ण मुक्त हो जाता है।
- ✧ किसी भी बुरी शक्ति का असर ऊपर नहीं हो सकता।
- ✧ आप परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हो।
- ✧ पूरी प्रकृतियाँ , ब्रह्माण्ड , सभी शक्तियां आपके अनुरूप काम करने लगती हैं।
- ✧ परमात्मा द्वारा संचालित होने के बाद ही आप कह सकते हैं।

"मौजमालिक" इसके पहले कहते हैं तो गलत है।

निहकर्म साधना :-

तन और मन से वाह्य और आंतरिक कर्म बंद कर दीजिए ,
असहजता से सहजता में आना है।

समर्पण :-

- ✧ समर्पण का ज्ञान सुनने से कुछ नहीं होगा ,समर्पण में उतरना है। अपने को ठहराना है। अपने को मिटाना है।
सर्व व्यापकता में लीन होना है।
- ✧ जिसको समर्पित होंगे उसका पावर तुम्हारे में आने लगता है।
- ✧ तुम्हारे शरीर में तत्व परिवर्तन होने लगते हैं ।

- ✧ तुम वही हो जाते हो।
- ✧ जो तुमको आवश्यक है ,वही मिलने लगता है।
- ✧ वह परमात्मा नहीं देता है,वह कहता भी नहीं है, प्रकृति सब देने लगती है।
- ✧ उसके गुण से जुड़ना ही सहजता है ,समर्पण है।
- ✧ सभी चाहतों को गिराना है ,सम्मुख होना है।

सहजता :-

- ✧ परमात्मा को सहज दृष्टि से देखना है। जहाँ जहाँ दृष्टि जाये ,सहज दृष्टि , सहज भाव से उसकी व्यापकता को देखना है।
- ✧ सहजता आपके समर्पण पर, भावों पर , दृष्टि पर , ठहराव पर , प्रयासरहित पर निर्भर है।

पूर्ण प्रयासरहित कैसे हों :-

- ✧ परमात्मा के किसी भी गुण को पहचान लो जैसे अमरता, परमशान्ति,सहज दृष्टि ,सहज भाव ,सर्व व्यापकता।
- ✧ दृष्टि सहज हो।
- ✧ भाव सहज हो।
- ✧ विचार सहज हो।
- ✧ सहजता से परमात्मा को सहज दृष्टि से देखना है।
- ✧ चेतना से पार होना है।
- ✧ प्रयासरहित होना है।
- ✧ कर्मों से सहज होना है।
- ✧ बिना प्रयास ,उस अमरता से ,अखंडता से जुड़ना है।

- ✧ जो भी काम करो सहजता से करो। जैसे - यदि सहजता से पढोगे तो जो एक महीने में याद होता है वह एक दिन में , एक बार में याद होने लगेगा।
- ✧ राम ने धनुष सहज भाव से तोडा ,हर्ष ,विषाद न कुछ मन आवा।
- ✧ सहजता आपके समर्पण पर ,भावों पर , दृष्टि पर , ठहराव पर, प्रयासरहित पर निर्भर है।
- ✧ सर्वव्यापी को ,अमर को , अखंड को ही पूर्ण श्रद्धा नमन विश्वास करना है।

अनंत की साधना :-

तत्वों से पार होकर ,अनंत हो सकते हो , आत्मिक सहजता से जुड़ो।

विमुख से सम्मुखता :-

तुम्हारी सुरत तो बाहर झाँक रही है। मेरी ओर नहीं देख रही है , सुरत का मुँह सबकी तरफ से हटके केवल और केवल परमात्मा की तरफ होना है।

इन्द्रियातीत :-

इन्द्रियातीत का अर्थ कान उसे सुन नहीं सकते। आँखें उसे देख नहीं सकती। सभी इन्द्रियों को अंदर की तरफ मोड़ कर मन को समर्पित कर दो। मन की दृष्टि संसार की तरफ से हटाकर परमात्मा की तरफ कर दो।

“कर से कर्म करो विधि नाना, मन राखो जहाँ कृपा निधाना।

विचारातीत :-

मन को "स्विच ऑफ" कर दो वर्तमान में आ जाओ , न एक मिनट आगे की बात न एक मिनट पीछे की बात सोचो।

भावातीत :-

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद, मत्सर इत्यादि किसी भी प्रकार का भाव न आये।

कर्मातीत :-

शरीर और मन कोई भी कार्य न करें।

मायातीत :-

इन्द्रियों द्वारा किया गया कर्म , मन द्वारा किया गया कर्म, जहाँ तक मन जाता है , वहाँ तक माया है। इससे पार होना है।

ज्ञानातीत :-

सभी ज्ञान जो अंदर प्रकाश देखते हो , शब्द सुनते हो वह भी द्वैत है , सब माया लोक में आ गए। सभी ज्ञानों से परे जाना है। कहने , सुनने , करने से परे जाना है।

गुणातीत :-

वह न एक है, न दो है न अनंत है। यदि एक है तो भी तो गुण हो गया। अतः कोई भी कैसा भी गुण न हो। गुणों से पार चलो ।

ध्यानातीत :-

जिसका ध्यान करते हो उसके गुण तुम्हारे में आने लगते हैं। तुम उसी के जैसे होने लगते हो। कुछ न करने की स्थिति का नाम ध्यान है। ध्यान में मन और सुरत दोनों स्थिर होते हैं। मन और सुरत के पार की स्थिति ध्यानातीत है।

प्राणातीत :-

स्वांस से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः प्राणायाम द्वारा या सुसुम्ना द्वारा भी उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।

पाँचों तत्वों से परे :-

हर तत्त्व में तत्वों वाला गुण है अतः वो तत्वों से परे है। राम ने धनुष सहज भाव में तोड़ा :- हर्ष, विषाद न कुछ मन आवा।

सहज होकर पढ़िए:-

तुरंत याद होगा।

परमात्मा:-

अचिंत, विश्वरूप, अतुलनीय जिसकी किसी से भी तुलना न हो सके। जो किसी के जैसा नहीं है। रूप, रंग, रेखा से न्यारा है।

चित्त :- चित्त की वृत्तियों का निरोध कर दो।

सुरत :- सुरत से ठहर जाओ, सुरत को स्थिर कर दो।

बहुत दौड़ लिया।

दौड़त दौड़त डौडिया, जहाँ लगी मन की दौड़।

दौड़-दौड़ मन, थिर हुआ, बस्तु ठौर की ठौर ॥

सुरत लगी संसार में, ता ते हो गयी दूर।

सुरत बाँधि स्थिर करो, आठों पहर हुजुर ॥

माया मरी, न मन मरा, मरि-मरि गया शरीर।

आशा तृष्णा न मरी, कहि गए संत कबीर ॥

मन और माया कैसे मरे :-

पूर्ण सहज होकर मन को स्विच ऑफ करना है।

आशा कैसे मरे :-

- ✧ जहाँ आशा वहाँ बासा
- ✧ यहि आशा अटके रहत, अलि गुलाब के मूल।
होइ-हई फेरि बसंत ऋतु, इन डारन वै फूल ॥
- ✧ इच्छाएं, कामनाएं, वासनाएं मन में न आएँ।
- ✧ जाकी सुरत लगी है जहवाँ,
कहैं कबीर सो पहुंचे तहवाँ।
- ✧ केवल आत्मज्ञान प्राप्त कीजिये।

तृष्णा कैसे मरे :-

- ✧ पढ़ लिए सभी ग्रन्थ, लांघ लिए सभी पंथ।
फिर भी नहीं हुआ, तृष्णा का अंत ॥
- ✧ तृष्णा सांपिन को नहि खाया,
को जग जाहि न व्यापी माया।
- ✧ आत्मज्ञान प्राप्त कीजिये।

सुरत कैसे ठहरे, और संसार से कैसे

अलग हों :-

जैसे हम कोई सतसंग में बैठे हैं , किसी समय हमारी "सुरत" किसी और जगह चली गयी , और हम वहां के बारे में सोचने लगे। हमारी "सुरत" वहां सतसंग में न होने के कारण , वहां का सत्संग हम सुन नहीं पाए , वह छूट गया क्योंकि हम वहां थे ही नहीं। ऐसे ही "सुरत" को संसार से हटाकर उसे "अचलपद" के सन्मुख कर देना है। वह अचल है उसके सन्मुख जो भी होगा वह अचल हो जायेगा , ठहर जायेगा , अतः हमारी सुरत ठहर जाएगी और हम :-

- ✧ संसार से अलग हो जायेंगे।
- ✧ परमात्मा के सन्मुख हो जायेंगे।

क्या चौथे पद की साधना से नीचे के सभी पद पार हो जाते हैं :-

जो चक्र या शरीर या कोश जो भी जाग्रत करोगे उसके नीचे वाले सभी स्वतः ही जाग्रत हो जाते हैं।

मन और माया को छोड़ना है , सत्य को पकड़ना है।

- ✧ धर्म :- धर्म न कौनौ सत्य समाना।
- ✧ माया :- गो गोचर जहाँ लग मन जाई ,
सो सब माया जानेउ भाई।
- ✧ सन्मुखता :-
"सन्मुख होई जीव मोहि जबहीं,
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं"

- ✧ विमुखता :- तजो रे मन हरी विमुखन को संग
- ✧ अनन्यता :- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
जो अनन्य हो चिंतन करते, भजते मुझे सप्रेम।
ऐसे भक्तजनो का, करता हूँ मैं योगक्षेम॥ ”
अनन्य का अर्थ सबकी तरफ से ध्यान, दृष्टि, मन और
सुरत को हटाकर केवल परमात्मा में ही लगाना है। यही
आत्मज्ञान, यही परमात्मा का ज्ञान है। परमात्मा ही सत्य
है।
- ✧ व्यापकता :-
जल ही माँ मीन पियासी, मोहि सुनि सुनि आवत हांसी।
आत्मज्ञान बिना नर भटके, कोई मथुरा कोई काशी ॥
- ✧ समीपता :-
मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मै तो तेरे पास में।
न मै मथुरा न मै काशी, न मै गिरि कैलाश में। ।
खोजी होय तुरत ही मिलिहौं, पल भर की तलाश में। ।
- ✧ प्रैक्टिकल ज्ञान :- सत्य नारायण की कथा खूब सुनी
परन्तु सत्य की खोज तो किया ही नहीं ।
- ✧ केवल सत्य को ही पकड़ना :- बूढ़ा माता वाली
कहानी खूब सुनी परन्तु संसार के मालिक को ढूँढा ही
नहीं ।

अभी तक क्यों नहीं ढूँढ पाए :-

- ✧ सकल अविद्या कर परिवारा ।
- ✧ मूरख हृदय न चेत, चहि गुरु मिलहि विरंचि सम।

फूलहिं फलहिं न वेंत , जदपि सुधा बरसहिं जलद ॥

- ✧ पारस को लोहे से एक इंच दूर रखोगे तो सोना नहीं बनेगा।
- ✧ चन्दन के वन में सभी पेड़ चन्दन बन जाते हैं , बांस नहीं बनता
क्योंकि वह अंदर से खोखला होता है।
- ✧ कबीरदास जी कहते हैं , "ऐ चरखी के तोते तुझे किसी ने पकड़ा नहीं है तू स्वयं ही चरखी को पकड़े हुए हो"। ऐसे ही तुम स्वयं ही माया को पकड़े हुए हो माया तुम्हें नहीं पकड़ी है।

सत्य की खोज :-

[1] अभी तुम मन द्वारा संचालित हो रहे हो , तुम्हें परमात्मा द्वारा संचालित होना है। क्योंकि -

- ✧ मन चेती नहीं होत है, प्रभु चेती तत्काल ।
- ✧ *मन के मते न चलिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोई एक॥*
- ✧ जिन्होंने मार मन डाला, उन्हीं को सूरमा कहना।
- ✧ कर से कर्म करौ विधि नाना ,
मन राखौ जहाँ कृपा निधाना।
- ✧ गीता का मुख्य सार तो यही है कि तुम परमात्मा को पूर्ण समर्पित हो जाओ , शरीर रुपी रथ का सारथी परमात्मा को बनाओ ।

[2] बहुत खोज कर लिया, बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया परन्तु जिसे जानना था उसे जाना ही नहीं।

- ✧ द्रोणाचार्य ने अर्जुन को यही सिखाया था कि निशाना मछली पर लगाना है तो तुम्हें और कुछ भी न दिखाई दे केवल और केवल मछली की आँख ही दिखनी चाहिए।
- ✧ तुम्हारा निशाना तो केवल परमात्मा पर होना चाहिए। परन्तु आप ज्ञान अर्जित करने में लग गए, आम खाने के स्थान पर आप गुठलियाँ गिनने में लगे हैं।
- ✧ माया मरी न मन मरा, मरि मरि गया शरीर।

आशा तृष्णा न मरी, कहि गए दास कबीर॥

मन, माया, आशा, तृष्णा कैसे मरे :-

“आत्मज्ञान प्राप्त करो।”

- ✧ तन थिर, मन थिर, वचन थिर, सुरत, निरत थिर कैसे होय।

“केवल आत्मज्ञान प्राप्त करो।”

परन्तु :- सिंहों के लेहड़े नहीं, हंसों की नहीं पाँत।

लालों की नहि बोरियाँ, साध न चलें जमात॥

- ✧ परमात्मा की कृपा के लिए :-

परमात्मा को पहचानना है जानना नहीं है क्योंकि -
जानत तुमहि, तुमहि होय जायी।

कैसे पहचाने :-

- गुरु रहित
- मन रहित
- माया रहित

- आशा रहित
- तृष्णा रहित
- क्रिया रहित
- कर्म रहित
- इन्द्रिया रहित
- मार्ग रहित
- तत्व रहित
- प्रकृति रहित
- द्वैत रहित
- अद्वैत रहित
- लोक रहित
- शरीर रहित
- गुण रहित
- ज्ञान रहित
- ध्यान रहित
- आधार रहित
- आकार रहित

परमात्मा की कृपा तो स्वयं ही होती है , किसी गुरु की आवश्यकता नहीं होती है। यदि कोई जानने वाले का मार्ग दर्शन मिल जाये तो अति सुगम हो जाता है। तुम्हारे शरीर के सभी अणु और परमाणु उसी की सुध में हो जाते हैं।

तृतीय चरण:-परमात्मज्ञान

- ✧ जिसका ध्यान करोगे उसी के गुण तुम्हारे अंदर आने लगते हैं। और तुम उसी के जैसे होने लगते हो।

- ✧ अतः भक्ति परमात्मा की करनी है। परमात्मा अमर है। अविनाशी है। अगम है। अनाम है। अकह है अमृत है मुक्त तत्व है। यह अलख से प्राप्त किया जाता है। यह सद्गुरु लखाता है।

“सद्गुरु वही कहावै, जो तुमको अलख लखावै।।”

तत्वों से परे है, वह परमतत्व का है। जो जिस तत्व का होता है उसकी साधना उसी तत्व से की जाती है। परमात्मा साकार, निराकार से परे है।

“जाके मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप अरूप।

पुहुप वास ते पातरा, ऐसो तत्व अनूप।।”

- ✧ परमात्मा की साधना के लिए पहले आत्मा को जानना होता है। आत्मा परमतत्व की है। पूर्ण मुक्त है। केवल उसको पहचानना होता है। उसकी कोई साधना नहीं होती है। उसी आत्मतत्व से परमात्मा को पहचाना जाता है। जो सर्व व्यापी है। हर जगह सारे ब्रह्मांडो में एक जैसा है।
- ✧ साधना में कर्म करना पड़ता है, वह कर्मातीत है अतः जितने भी कर्म हैं उसे उनसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, जितने शरीर हैं उनसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। वह विदेही है।

*“बिन पावन का पंथ है, बिन बस्ती का देश,
बिना देह का पुरुष है, कहत कबीर सन्देश।”*

“पवन नहीं, पानी नहीं, नहीं शब्द प्रकाश।

तहाँ कबीरा संत जन, साहव सदा सुवास ।।”

- ✧ जीवित मरिये भव जल तरिये :- आप जिस दिन परमात्मा को पहचान लेते हैं उसी दिन आप सभी शरीरों को पार करके मुक्त परमतत्व से मिल जाते हो और मुक्ति सदैव के

लिए प्राप्त कर लेते हो। फिर कोई साधना की आवश्यकता नहीं, किसी गुरु की आवश्यकता नहीं।

- ✧ तुमको अच्छे बुरे से निकाल कर सहज प्रभाव में डाल दिया जाता है।
- ✧ जैसे नदी में एक पत्ता डाल दो, पत्ते को नदी जिधर ले जाएगी पत्ता उधर ही जायेगा पत्ता खुद नहीं चाहेगा कि मैं इधर जाऊँ। ऐसे ही शरीर, मन, भाव, विचारों को जिधर जाते हैं सहजता से बहने दो।
- ✧ एकै साधे सब सधे :- सब का अर्थ है सभी चक्र, सभी शरीर, सभी लोक, सभी प्रकृतियाँ इत्यादि।
- ✧ परमात्मा की भक्ति में "देही" शरीर का ज्ञान न करके, "विदेही" जहाँ पर कोई शरीर नहीं है, वहाँ की भक्ति की जाती है। क्योंकि शरीर बनते हैं और जो बना है वो कभी मिट जायेगा।
- ✧ शरीर में इन्द्रियाँ और मन होते हैं जैसे सूक्ष्म शरीर में सूक्ष्म मन, कारण शरीर में कारण मन और महाकारण शरीर में महाकारण मन इत्यादि ऐसे ही जितने शरीर होते हैं उसी प्रकार का मन भी वहाँ पर होता है जहाँ तक मन है वहाँ की भक्ति मन की भक्ति मानी जाएगी, जहाँ मन है वहाँ माया है। इसीलिए शरीरों से परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती है। यह मन मुखी भक्ति है।
- ✧ परमात्मा की साधना से तुम्हारे सभी शरीर, सभी मन, सभी प्रकृतियाँ एक ही सीध में हो जाती हैं। और तुम उसके सम्मुख हो जाते हो।

*"सम्मुख होय जीव मोहि जबहीं,
जन्म कोटि अघ नाशहिं तबहीं"*

- ✧ *"तीन लोक एक जेल हैं, पाप पुण्य दो जाल।"*

सारा जग भोजन बना , खाने वाला काल।।"

तुम्हारा मन ही काल है इस मन से बाहर निकलना है।
मन द्वारा जो भी किया जाता है सब माया है। माया को
छोड़ दो परमात्मा को पकड़ लो।

- ✧ तुम अभी मनमुखी हो , तुम्हें परमात्ममुखी होना है। अभी तुम्हारे और परमात्मा के बीच में मन है इसीलिए परमात्मा दिखता नहीं है। मन और परमात्मा के बीच में तुम्हें आना है जैसे ही तुम मन और परमात्मा के बीच आते हो उसके सम्मुख हो जाते हो।
- ✧ उस अमर की साधना के आलावा जो भी तुम साधना करते हो वह मन की साधना है। हर साधना का reaction प्रतिक्रिया होती है। क्योंकि विज्ञान का नियम है कि हर क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है। उससे हमको बचना पड़ता है। जबकि परमात्मा की साधना में कोई क्रिया ही नहीं है तो कोई प्रतिक्रिया भी नहीं होती है।

गुरु कैसा दूढ़े :-

- ✧ जिसके अंदर परमात्मा प्रकट हो गया हो।
- ✧ जो अलख का ज्ञान लखाता हो।
- ✧ जो ज्ञान न अंदर का हो और न बाहर का हो
" जो अंदर बाहर सकल निरंतर , मुँह से कहा न जाई हो।
जिन पहचाना तिन भल माना ,कहे तो गो पति आयी हो।।"
- ✧ जो तुमको ऐसा ज्ञान दे जो अविनाशी हो , अमर हो , परम हो , जिसका कभी विनाश न हो।
- ✧ तत्वों से पार , काया से परे , माया से परे, मन से परे ,इन्द्रियों से परे हो।

- ✧ तुमको कोई क्रिया न करनी पड़े तुमको जपना न पड़े , ध्यान न करना पड़े , जाप , अजपा , और अनहदनाद की भी साधना न बताये क्योंकि यह सब मन की साधना है। मनमुखी से तुमको परमात्ममुखी कर दे।
- ✧ तुम जो मन द्वारा बनाया ज्ञान ग्रहण कर रहे हो उसको छुड़वाकर प्राकृतिक ज्ञान जो परमात्मा का ज्ञान है उसे लखा दे।
- ✧ गुरु के शरीर की पूजा नहीं की जाती है , उसका शरीर गुरु नहीं है , उसके अंदर जो परमात्मा प्रकट हुआ है वह "सतगुरु" है , उसी की पूजा की जाती है।
- ✧ "पारस और गुरु में यह है अंतर जान ।
पारस तो कंचन करे , गुरु कर ले आप समान ।। "
- ✧ जिसमे विद्वता , अनुभूति , अभिव्यक्ति तीनों हो।

आध्यात्मिक शब्दों की जानकारी

1. क्षर :- तुम्हारा शरीर है।
2. अक्षर :- जीव है।
3. निः अक्षर:- आत्मा है। आत्मा का बोध होता है ज्ञान नहीं क्योंकि ज्ञान प्रतिबिम्ब है।
4. पिंड:- तुम्हारा शरीर , "जीव " अवस्था है।
5. ब्रह्माण्ड :- मन के सभी लोक , "सीव" अवस्था है।
6. ब्रह्म :- शून्य और महाशून्य से ब्रह्माण्ड बने , उनके धनियों को ब्रह्म और परब्रह्म इत्यादि कहते हैं। अगणित ब्रह्माण्ड कहा गया है। बहुत से ब्रह्माण्ड और उसके मंडल हैं। तुम्हारा मन ही ब्रह्म है।
7. मैं:- तुम्हारा "मन" है।
8. चार राम :-

- पहला राम तुम्हारा शरीर है।
- दूसरा राम तुम्हारा मन है।
- तीसरा राम तुम्हारी सुरत है।
- चौथा राम आत्म पद है।

9. ध्यान विदेही:- मन और सुरत को ठहरना है।
10. नाम विदेही :- सारशब्द लखना बोध होना।
11. विदेही :- ऐसी वस्तु जिसमें कोई तत्व नहीं , कोई शरीर नहीं , " सारशब्द"
12. काग रूप :- जब सुरत शरीर में जीव अवस्था में होती है।
13. हंस रूप :- जब सुरत सारशब्द में , "पीव" अवस्था में होती है।
14. जीव:- स्थूल शरीर में सुरत रूप में।
15. सुरत :- सारशब्द से जो धार निकल रही है उसे सुरत कहते हैं।
16. द्रष्टा:- शरीर को देखने वाला द्रष्टा है।
17. साक्षी :- मन को प्रकाश रूप में देखने वाला साक्षी है।
18. अपरोक्ष :- (i) आत्मा द्वारा, आत्मा का ही बोध होना, अपरोक्ष है।
(ii) स्वयं द्वारा आत्म स्वरूप का ही बोध होना।
19. सतगुरु - सारशब्द है।
20. सद्गुरु - "शरीर वाला गुरु" है जो सारशब्द लखाता है।
21. वैराग्य क्या है :-
अन्तः जगत और बाह्य जगत दोनों से दृष्टि को हटाकर केवल "सारशब्द" परमात्मा पर दृष्टि हो।

सुरत द्वारा रचना :-

- ✧ जैसे सूर्य से सूर्य की किरणें निकलती हैं, इसी प्रकार से सारशब्द से नीचे की तरफ एक धार गोल-गोल चक्कर काटती हुई उतरी उसी धार से सारी प्रकृतियाँ और ब्रह्माण्ड , तीन लोक और माया की रचना हो गयी। यही सुरत की धार जब स्थूल शरीर में होती है तब इसे "जीव अवस्था " और जब सारशब्द में होती है तब इसे "पीव अवस्था" कहते हैं।
- ✧ आप घर में बैठे हो आपकी दृष्टि चौराहा देख रही है। बहुत दूर की चीज़ें सुरत की दृष्टि से देख रहे होते हो। यही देखने की दृष्टि को सुरत कहते हैं।
- ✧ गृह , नक्षत्र , ब्रह्माण्ड घनेरे , सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे।

आत्मा:- "सारशब्द" रूप में परमतत्त्व की , परमपद में।
नहीं कबीर , नहीं धर्मदासा , अक्षर एक सकल भ्रम नासा।

आत्म बोध होने पर यह 16 गुण व्यक्ति में स्वयं ही प्रकट हो जाते हैं।

1. कूर्म:- कछुआ की तरह सभी इन्द्रियां अंतर्मुखी होकर परमात्मा द्वारा संचालित होने लगती हैं।
2. ज्ञानी:- बिना आत्मबोध के कोई ज्ञानी नहीं हो सकता है। आत्मबोध होने को ही ज्ञानी कहा गया है।
3. विवेक :- आत्मबोध होने से ही विवेक जाग्रत होता है। यही सत्यपद है , यही परमपद है।

बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

4. तेज :- आत्मबोध से मन स्थिर हो जाता है , जिससे मन का प्रकाश तेज के रूप में प्रकट होने लगता है।
5. सहज :- सहजता से ही आत्मबोध होता है। आत्मबोध होने से ही इन्द्रियां , मन , सुरत , निरत सब पूर्ण सहज हो जाते हैं।
6. संतोष :- संतोष प्रकट हो जाता है।
7. सुरत:- सारशब्द से पारस सुरत की धार निकलती है, वह जिसको भी छू लेती है अपने समान बना लेती है।
8. आनंद :- नीचे के पदों में द्वैत है। जैसे सुख है तो दुःख भी है, आनंद है तो पीड़ा भी है। परन्तु चौथे पद में द्वैत-अद्वैत कुछ भी नहीं है। इसीलिए वह परमपद है। वहां पर केवल परमानंद ही है।
9. क्षमा :- क्षमा आत्मा का गुण है यह गुण हमारे में आता है।

क्षमा बड़ेन को चाहिए , छोटेन को उत्पात।

का रहीम हरि को घट्यौ, जो भृगु मारी लात।।

10. निष्काम:- तुम सच्चे बनो कर्मयोगी ,निष्काम करो कर्तव्य सदा। परोपकार वाला गुण।
11. जलरंगी:- पानी रे पानी तेरा रंग कैसा ,
जिसमे मिला दो उसी के जैसा।
12. अचिंत :- चाह गयी चिंता गयी मनुवा बे परवाह ,
जाको कछु न चाहिए, सो साहों का साह।
13. प्रेम :- परमप्रेम , unconditional , बिना शर्त का प्रेम प्रकट हो जाता है।
14. दयाल :-तीन लोक काल के चौथा पद दयाल का है।आप दयाल बन जाते हैं।

15. धैर्य :- समता में रहना , धैर्य प्रकट होना , धीरज होना।

16. जोगजीत:- चित्त पूर्ण रूप से लय हो जाता है। चौथे पद में कोई योग , कोई क्रिया नहीं है। आप सभी योगों से परे हो जाते हो। जानति तुमहि-तुमहि होइ जाई ।

"गोविन्द" से "गुरु" बड़ा क्यों ?

● बिना गुरु के गोविन्द :-

वह गोविन्द हर जगह व्याप्त होते हुए भी हमारे में कोई परिवर्तन नहीं कर पाता है। और हम ऐसे ही जीवन गुजार कर चले जाते हैं। न हमारा मन मरता है और न माया मरती है और न मोक्ष की प्राप्ति होती है , न गोविन्द हमारी कोई सहायता करता है।

● गुरु के साथ गोविन्द :-

- ✧ गुरु ही गोविन्द को हमारे घट में प्रकट कराता है।
- ✧ गुरु ही हमें गोविन्द के सन्मुख कर देता है।
- ✧ सन्मुख होते ही मन , माया , आशा , तृष्णा , सुरत , निरत , चित्त, सब उसी में लय हो जाते हैं और हमें पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाता है।
- ✧ पूरी प्रकृति और ब्रह्माण्ड हमारे अनुरूप कार्य करने लगते हैं।
- ✧ हमारी सहायता परमात्मा करने लगता है।
- ✧ हम परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।

तन घट , मन घट , आत्म घट का

अध्ययन :-

	<u>तन घट</u>	<u>मन घट</u>	<u>आत्म घट</u>
1	कर्म काण्ड	ज्ञान काण्ड	उपासना काण्ड
2	इन्द्रियों द्वारा	मन द्वारा	आत्मा द्वारा
3	शरीर के बाहर का ज्ञान	शरीर के अंदर का ज्ञान	शरीर के अंदर का न शरीर के बाहर का ज्ञान।
4	स्थूल ज्ञान	सूक्ष्म ज्ञान	सत्य ज्ञान , परमज्ञान
5	साकार का अध्ययन	निराकार का अध्ययन	विदेह का अध्ययन
6	स्थूल तत्वों का अध्ययन	सूक्ष्म तत्वों का अध्ययन	परम तत्व का अध्ययन
7	साधना 52 अक्षरों द्वारा , वाचक ज्ञान , वेद , शास्त्र , गीता , पुस्तकीय ज्ञान	प्रकृतियों और ब्रह्म का ज्ञान।	आत्मा और परमात्मा का ज्ञान
8	शीघ्र नाशवान का अध्ययन	देर से नाशवान का अध्ययन	अमर का अध्ययन
9	कोई मोक्ष मुक्ति नहीं	कोई मोक्ष नहीं है	पूर्ण मोक्ष
10	क्रिया , जप , तप , व्रत , तीर्थ	मन द्वारा किया गया कर्म	निह कर्म (क्रिया , कर्म से न्यारा)

	इत्यादि	साधना , अनहद नाद (शब्द) द्वारा	साधना- सार शब्द द्वारा
11	स्थूल देह	सूक्ष्म शरीर , कारण शरीर , महाकारण शरीर	विदेह
12	गुरु 52 अक्षरों से कोई नाम जपने को देता है।	अंदर के स्थानों की धुन और वहां के शब्द को एक में मिला कर उस स्थान को पार किया जा सकता है।	सुरत को सार शब्द से लगाया जाता है।
13	पढ़ लिए सभी ग्रन्थ , लांघ लिए सभी पंथ। फिर भी नहीं हुआ , तृष्णा का अंत।।	माया मरी न मन मरा, मर मर गया शरीर। आषा तृष्णा ना मरी, कह गये संत कबीर।।	मन , माया , आशा , तृष्णा , सभी मर जाते है। परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।
14	"जीव" मनमुखी रहता है।	"जीव" मनमुखी ही रहता है।	"जीव" गुरुमुखी , परमात्मामुखी रहता है।
15	जीव , जीव अवस्था में ही रहता है।	"जीव" सीव अवस्था में आ जाता है।	"पीव" अवस्था प्राप्त हो जाती है।

16	'सुरत' शरीर में ही रहती है।	'सुरत' मन में ही रहती है।	'सुरत' सारशब्द में समा जाती है , पारस सुरति हो जाती है , जिसे छू लेती है उसे अपने समान बना लेती है।
17	क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है।	सूक्ष्म प्रतिक्रियाएं होती रहती हैं।	जब कोई क्रिया ही नहीं होती तो कोई प्रतिक्रिया भी नहीं होती।
18	तन तत्वों से बना है।	मन आकाश तत्व से बना है।	आत्मा परम तत्व की है , इसे ही अभय पद , गुरुपद , रामपद , अखंड पद , भी कहते हैं।
19	करनी बिन कथनी कथे , अज्ञानी दिन रात। कूकर सम भूकत फिरै , सुनी सुनाई बात॥	(i)मन तू ज्योति स्वरूप है। (ii)मन आत्मा को नहीं पकड़ सकता है। आत्मा को छूते ही मन की गति समाप्त हो जाती है। और मन मर जाता है।	(i)राम एक पद है , वह अमर पद है , अखंड पद है। (ii)राम नाम कर अमित प्रभावा , वेद , पुराण , उपनिषद गावा। (iii)पिंड , अंड , ब्रह्माण्ड के

		<p>(iii)योग से चित्त की वृत्तियों का पूर्ण निरोध नहीं हो पाता है।</p> <p>(iv)मन घट में ही ब्रह्मज्ञान का अनुभव होता है।</p> <p>(v)इसमें मन की आँखों से ही प्रकाश देखा जाता है और मन के कान से अनहद नाद सुना जाता है।</p> <p>(vi)देखने वाला और सुनने वाला मन ही होता है।</p>	<p>पारा सो निज 'पीव' हमारा है।</p> <p>(iv)आवे न जावे, मरे न जन्मे , सो निज 'पीव' हमारा है।</p> <p>(v)धर्म दास यह जग बौराना , कोई न जाने पद निर्वाना।</p> <p>(vi)है कोई परलय पार का , जो भेद कहे "झनकार" का।</p> <p>(vii)सबके ऊपर नाम निःअक्षर , तहँ पर मन को राखै। तब मन की गति जानि परत है, संत कबीर असि भाखै॥</p> <p>(viii) आदि नाम हम भाख सुनाया , मूरख जीव समझ नहीं पाया।</p> <p>(ix)मन , माया ,</p>
--	--	---	--

			<p>आशा , तृष्णा , सब समाप्त हो जाते हैं।</p> <p>(x)चित्त और चित्त की वृत्तियाँ लय हो जाती है समाप्त हो जाती हैं चित्त पूर्ण लय हो जाता है।</p> <p>(xi)जीव 'पीव' अवस्था में आ जाता है। यह पूर्ण मुक्त अवस्था है।</p> <p>(xii)जीव परमात्मा द्वारा संचालित हो जाता है।</p>
20	इन्द्रियों का संचालन परमात्मा द्वारा हो जाये।	मन और माया का संचालन परमात्मा द्वारा हो जाये।	केवल आत्मज्ञान से इन्द्रियाँ, मन, माया सबका संचालन परमात्मा द्वारा होने लगता है।

तीन प्रकार के घटों का अध्ययन हम करेंगे :-

[1] आत्म घट :-

- ✧ यहीं पर अखंड , एक रस , ध्वनि हो रही है। इसमें कोई गति नहीं है। कोई मिलौनी जैसे प्रकाश इत्यादि कुछ भी नहीं है। यह अकेला है , इसी को "सारशब्द" कहा गया है। इसमें कोई भी चीज़ मिल नहीं सकती है। यह किसी

को भी स्पर्श नहीं कर सकता है। यह सभी लोकों में सभी ब्रह्माण्डों में एक रस , अखंड व्यापक है।

सुरत जब इसके सम्मुख होती है तब इस अवस्था को "पीव" अवस्था कहते हैं।

- ✧ यह घट न शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है।
- ✧ यह पूर्ण अवस्था है।
- ✧ यह विदेह अवस्था है , इसी को नाम विदेही भी कहते हैं।
- ✧ यह पूर्ण अचल है इसमें कोई गति नहीं है , कहीं आता जाता नहीं है।
- ✧ कोई परिवर्तन नहीं होता है। "जो बदले सो माया "।
- ✧ सभी लोकों में , सभी ब्रह्माण्डों में , सभी प्रकृतियों में वह एक रस व्यापक है।
- ✧ अखंड है , कोई खंड नहीं है।
- ✧ अमर है , अविनाशी है , आदि है , अनादि है।
- ✧ यहाँ कोई भी दूसरी वस्तु नहीं है।
- ✧ सभी तत्वों से परे है , कोई भी तत्व मौजूद नहीं है , परमतत्व का है।

जाके मुँह माथा नहीं, नाहिं रूप अरूप /

पुहुप बास ते पातरा, ऐसा तत्व अनूप ॥

- ✧ कोई आकार नहीं , कोई स्वरूप नहीं , कोई सीमा नहीं , कोई समय नहीं , कोई सुगंध नहीं , कोई अणु परमाणु नहीं।
- ✧ कोई क्रिया नहीं , कोई कर्म नहीं , कोई शरीर नहीं , कोई इन्द्रियां नहीं , कोई भी मन नहीं , कोई भी सुरत नहीं , कोई भी गुण नहीं। इसीलिए योगातीत ,

विचारातीत , भावातीत , गुणातीत , क्रियातीत , कर्मातीत ,
ध्यानातीत , मायातीत , प्राणातीत ।

- ✧ कोई मार्ग नहीं , कोई आधार नहीं , कोई आकार नहीं ,
कोई रंग नहीं , कोई परिवर्तन नहीं ।
- ✧ कोई दूसरा वहां पर नहीं है इसलिए द्वैत भी नहीं है ।
- ✧ यह एक भी नहीं है इसलिए अद्वैत भी नहीं है । अद्वैत से परे
है ।
- ✧ यह सत्य है । इसे परम पद कहते हैं । इसके सम्मुख जो भी
आता है वह परम हो जाता है ।

जानत तुमहिं-तुमहिं होइ जाई ।

- ✧ इसके सम्मुख होने पर मन मर जाता है , माया मर जाती
है । आशा , तृष्णा मर जाती है । वह थिर है इसलिए सुरत ,
निरत भी थिर हो जाती है ।
- ✧ यही गुरुपद है , यही रामपद है , यही चौथा पद है , यही
राधा स्वामी पद है । यही निजपद है , यही निजनाम
है , यही निज स्वरूप है ।
- ✧ इस चौथे पद , राधास्वामी पद , के केवल सम्मुख होना
होता है । कुछ भी करना नहीं पड़ता है , केवल पूर्ण सहज ,
पूर्ण प्रयासरहित , अनन्य होकर , उसी में लीन होना होता
है ।
- ✧ जैसे ही उसके सम्मुख होते हो , वैसे ही चुम्बक की तरह
तुमको अपनी ओर खींच लेता है और तुम उसी की तरह
के हो जाते हो , सभी शरीरों से पार हो जाते हो , सभी
ब्रह्माण्डों के पार हो जाते हो , तन घट , मन घट के भी पार
हो जाते हो ।

लेटे, बैठे, खड़े, उताने, कहैं कबीर हम वही ठिकाने॥

✧ आप परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हो।

✧ यह अचिंत पद, निर्भय पद है। इसके सम्मुख होने के बाद आप कोई भी चिंता, परवाह नहीं करते हैं। पूरी प्रकृति आपके अनुरूप कार्य करने लगती है।

तुम्हरी चिंता मैं मन धारी, तुम अचिंत है रहो सुखारी।

यह करनी मैं आप कराऊँ, और पहुंचाऊँ धुर दरवारा ॥

[2] मन घट:-

सुरत जब इस घट में होती है तब इसे "सीव" अवस्था कहते हैं। जैसे सूर्य स्थिर है, उसमे से किरण निकल कर पृथ्वी तक आती हैं ऐसे ही सुरत आत्म घट से नीचे की ओर गोल-गोल घूमती हुई, चक्कर काटती हुई, सभी प्रकृतियों, ब्रह्माण्डों, लोकों की रचना करती हुई एक स्थान पर रुकी और इसको मन का रूप दे दिया। यहीं से गति प्रारम्भ हुई, यहीं से माया प्रारम्भ हुई, शब्द से प्रकाश निकला और अलग-अलग मंडलों में वहीँ की ध्वनि को प्रकाश के आधार पर मंडल बना दिए। यहाँ पर मन को तीन लोक का राजा बनाकर सब इसी के अधीन कर दिया गया। यहाँ की धुनें तत्वों की धुनें व प्रकाश तत्वों के प्रकाश हैं। सभी सूक्ष्म मंडलों में अलग-अलग सूक्ष्म, अति सूक्ष्म तरह के आकाश बना दिए। इसमें सभी मंडल, सभी आकाश, एक जैसे नहीं हैं, अखंड नहीं हैं, अपार नहीं हैं क्योंकि एक मंडल को पार करके दूसरे मंडल में जाया जाता है। इसके अध्ययन को ब्रह्मज्ञान कहते हैं। इसमें आकाश को ही परमात्मा कहा

जाता है, जो गलत है क्योंकि वह अखंड नहीं है , एक रस नहीं , अपार नहीं है।

[3] तन घट:-

सुरत जब तन घट में होती है तब इसे "जीव" अवस्था कहते हैं। मन घट से सुरत नीचे की तरफ चली और शरीर का निर्माण कर दिया। इसमें सभी पांच तत्वों के चक्र अलग अलग बना दिए , तन घट का अध्ययन करने वाले शरीर के चक्रों का अध्ययन करते हैं। जबकि कहा गया है। चक्रों का अध्ययन पानी मथने के समान है , पानी से घी नहीं निकल सकता है।

[4] चौथा पद :-

यह कोई शरीर नहीं है यह विदेही ज्ञान है। विदेह वह है जो शरीर के न अंदर है और न शरीर के बाहर है, और हर जगह भी है। इसे ही आत्म पद कहते हैं। इसे ही गुरु पद कहते हैं , इसे ही परमपद कहते हैं। इसे ही सतगुरु पद कहते हैं।

गुरु:- जो आत्मपद में पहुँच गया है।

सदगुरु :- जो आत्मपद में पहुँच गया है।

संत:- जो आत्मपद में पहुँच गया है।

परमसन्त:- जो आत्म पद में पहुँच गया है।

परमसन्त सदगुरु वक्त :- जो आत्म पद में पहुँच गया है।

और इस वक्त में गुरु का कार्य भी करता है। दीक्षा देता है। उसे परमसन्त सदगुरु वक्त कहते हैं।

जो लोग कहते हैं कि जो चीज़ मेरे पास है पूरे ब्रह्माण्ड में कही नहीं है इसका सच :-

चौथा पद आत्मपद तीन लोकों से परे है। अतः वह चीज़ अर्थात् चौथा पद "आत्मपद" सभी ब्रह्माण्डों में कही है ही नहीं। अतः सभी लोगों का कहना सत्य है। इसका अर्थ यह नहीं कि केवल उन्हीं के पास है। जो उस पद में पहुँच गया उन सभी के पास है।

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा:-

क्रम सं	चार प्रकार के पद	पहला पद	दूसरा पद	तीसरा पद	चौथा पद
<u>1</u>	चार प्रकार की चाल	चींटी की चाल	मकड़ी की चाल	मछली की चाल	विहंगम चाल
<u>2</u>	चार प्रकार का ज्ञान	पविल ज्ञान	तत्व ज्ञान	ब्रह्मज्ञान	आत्मज्ञान
<u>3</u>	चार ज्ञान का माध्यम	इन्द्रियां	मन	सुरत	आत्मा
<u>4</u>	चार प्रकार के मन्त्र	जाप	अजपा	अनहद नाद	सारशब्द
<u>5</u>	मन्त्र देने का प्रकार	कान में मन्त्र	श्वास के साथ जाप	अनहदनाद मन के कान से सुनना	नाम विदेही
<u>6</u>	चार को जानना	जीव	मन	सुरत	आत्मा
<u>7</u>	चार को छोड़ना	क्रिया	माया	मन	सुरत
<u>8</u>	चार प्रकार की भक्ति	कर्म वाचक ज्ञान	मन से	सुरत से	आत्मा से आत्मा की
<u>9</u>	चार राम	शरीर से	मन	सुरत	आत्मा
<u>10</u>	चार मुक्ति	सालोक	समीप	सारूप	सायुज्य मुक्ति

विवेकी सत्संग :-

जड़ , चेतन , गुण , दोष , मय , विश्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुण गहहिं पय , परिहरि वारि विकार॥

अपना विवेक जगाओ , केवल और केवल उसी को खोज लो
जिससे :-

"इच्छाओं" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "मन" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "प्रकृति " पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "माया" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 सभी "शरीरों" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 सभी "तत्वों" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "भय" और "चिंता" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "आशा" और "तृष्णा" पर तुम्हारा वश हो जाये।
 "सुख" और "दुःख" पर तुम्हारा वश हो जाए।
 "चित्त"की वृत्तियों का निरोध हो जाये।
 "चित्त" पूर्ण रूप से लय हो जाये
 प्रकृति की "प्रतिक्रियाओं" से बचे रहें।
 मन की "गति" समाप्त हो जाये।
 "मन" मर जाये और हम सूरमा बन जाएँ।
 "चौरासी" से मुक्त हो जाये।
 "भवसागर" से मुक्त हो जाएं।
 धर्म , अर्थ, काम , मोक्ष चारों पुरुषार्थ पूर्ण हो जाये।
 पाप , पुण्य से पार हो जाये।
 परमशांति परमानन्द प्राप्त हो जाये।
 हम परमात्मा द्वारा संचालित हो जाये।

परमात्मा को कहाँ और कैसे ढूँढ़ें :-

✧ जहाँ तक मन और माया है उसके पार से खोजना प्रारम्भ करें।

- ✧ साकार और निराकार के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ प्रकाश और अनहदनाद के पार से खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सभी शरीरों जैसे स्थूल , सूक्ष्म , कारण , महाकारण , कैवल्य और हंस शरीरों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सभी प्रकृतियों , सभी ब्रह्माण्डों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सभी आकाशों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सभी तत्वों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सभी स्वरूपों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ भाव , विचारों के पार खोजना प्रारम्भ करें।
- ✧ सुमिरन , ध्यान , भजन के पार खोजें।
- ✧ सभी कर्मों के पार खोजें।
- ✧ सभी योगों के पार खोजें।
- ✧ द्वैत , अद्वैत के पार खोजें।
- ✧ न शरीर के अंदर खोजें और न शरीर के बाहर खोजें दोनों के पार खोजें।
- ✧ सभी लोकों के पार खोजें।

करना क्या है , जानना क्या है , खोजना

क्या है:-

केवल और केवल अपनी "सुरत" को जो अभी देह के साथ में रहती है. इसे देह से हटाकर केवल आत्मा से जोड़ देनी है। यही आत्मज्ञान है।

सुरत तुम दुःखी रहो हम जानी।

"जा दिन से तुम शब्द विसारा , मन संग यारी ठानी।

सुरत तुम दुःखी रहो, हम जानी।।"

"जाकी "सुरत" लगी है जहवाँ , सो प्राणी पहुंचे तहवाँ।।"

वस्तु एक नाम अनेक:-

"आत्मपद को गुरुपद , निर्भयपद , अनामपद , अचिंत पद , निर्वाण पद , राम पद , राधास्वामी पद , सत्य पद, निशब्द पद , अलख पद , सतगुरु पद , विदेही पद , सतनाम , निजनाम , निः अक्षर , अखंड पद , अमर पद , निः तत्व , परम पद , मूल ज्ञान , मोक्ष पद , किलिया , धुरी , निजपद अकह नाम , बंदी छोर सब इसी को कहते हैं। इसी को जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है।

जिन यह एकै जानिया , ते जानो सब जान।

जिन यह एक न जानिया , सबहीं जान अजान॥

शब्द-शब्द सब कोई कहे वह तो शब्द विदेह।

जिह्वा पर आवे नहीं , निरख परख कर लेव॥

राधास्वामी नाम सार है , सार-सार का सारा।

जो यह सुमिरै नाम सहज होय , तुरत होय भव पारा॥

यही शब्द "सारशब्द" है , यही गुरु है :-

गुरु किया है देह को , सतगुरु चीन्हा नाहि।

भवसागर के जाल में फिर-फिर गोता खाहिं ॥

इसी पद को पहचानना है यही गुरु पद सबसे बड़ा है , इसी को कहा गया है।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े , काके लागूं पाय।

बलिहारी व गुरु की , जिन गोविन्द दियो लखाय॥

इसी पद को "आत्मघट" भी कहते हैं। इसी को पहले जाना जाता है इसी से परमात्मा को जाना जाता है , परमात्मा ऐसा

ही है जो सर्वयापी है। सभी जगह ,सभी ब्रह्माण्डों , सभी लोकों में अखंड , एक रस , व्यापक है। वह व्यापक होते हुए भी हमें स्पर्श नहीं करता है। किसी को भी स्पर्श नहीं करता है। शब्द , स्पर्श , रूप , रस , गंध कोई भी गुण नहीं है। यह गुण तत्वों के हैं। यह "गुरु पद " किसी को भी स्पर्श नहीं करता है। परन्तु जो इसके सम्मुख आ जाते है। उनको ये अपने जैसा मुक्त , परम , सर्वशक्तिमान , बना लेता है।

“पारस और गुरु में यह है अंतर जान।

पारस तो कंचन करे , गुरु कर ले आप समान ॥”

“सोई जानई जेहि देउ जनाई , जानति तुमहिं -तुमहिं होइ जाई ॥”

तुम्हारे सभी मन , सभी माया , सभी तृष्णा , सभी आशा सभी मर जाते हैं, शरीर के सभी अणु -परमाणु , सभी प्रकृतियाँ उसी के सम्मुख हो जाती हैं , और परमात्मा द्वारा संचालित होने लगती हैं।

उसको जानने के लिए क्या करे :-

- ✧ अनन्य होना है।
- ✧ पूर्ण सम्मुख होना है।
- ✧ सुरत को मन से हटाकर आत्मा से जोड़ना है।
- ✧ पूर्ण सहज होना है।
- ✧ विचारतीत , भावातीत
- ✧ सुरत को देह से हटाकर , विदेही में मिला देना है।
- ✧ क्रिया , कर्म छोड़कर , पूर्ण समर्पण से उसी की व्यापकता में लीन होना है।

अनहद और सारशब्द में भेद

- ✧ अनहद गति कुछ और है, सारशब्द कुछ और।
अनहद माया जानकर, सत्य का पकड़ो ठौर ॥
- ✧ अनहद और शब्द में, बहुत बड़ा है भेद।
एक तत्व एक परमपद, एक खंड एक अभेद ॥
- ✧ गुरु वही जो शब्द सनेही।
- ✧ गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न मोक्ष।
गुरु बिन लखे न सत्य को, गुरु बिन मिटे न दोष ॥
- ✧ शब्द से रची त्रिलोकी सारी, शब्द से माया प्रकटी सारी।
शब्द से पिंड ब्रह्माण्ड बना री, शब्द को जैसे बने वैसे पा री ॥

क्या पिंड, अंड, ब्रह्माण्ड की रचना नकली है :-

आदि माया कीनी चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई।
अविगत रचना रची अंड माही, ताका प्रतिबिम्ब डारा है ॥

शब्द विहंगम चाल हमारी, कहै कबीर सतगुरु दर्ई तारी ।
खुले कपाट शब्द झनकारी, पिंड, अंड के पार सो देश हमारा है ॥

"परमसतसंग" प्रथम भाग

गुरु कैसा ढूंढे :-

- ✧ जिसके अंदर परमात्मा प्रकट हो गया हो , जो पूर्ण हो।
- ✧ जो स्थिर प्रज्ञ हो।
- ✧ जो अलख का ज्ञान लखाता हो ।
- ✧ जो ज्ञान न अन्दर का हो और ना बाहर का हो ।
- ✧ जो ज्ञान अविनाशी हो, अमर हो, तत्वों से पार, काया से पार, माया से पार, मन से पार, इन्द्रियों से पार हो ।
- ✧ तुमको कोई क्रिया न करनी पड़े, तुमको जपना न पड़े, ध्यान न करना पड़े, जाप , अजपा , अनहदनाद की भी साधना न बताये , यह सब मन की साधना है। इसी को तो छोड़ना है। और तुम इसी को पकड़े पड़े हो।
- ✧ तुम अभी मन द्वारा बनाया गया ज्ञान ग्रहण कर रहे हो। उसको छुड़ाकर जो प्राकृतिक ज्ञान है उसे लखा दे।
- ✧ तुम्हें परमात्मा के सन्मुख कर दे।
- ✧ जैसे ही तुम उसके सन्मुख होगे वह तुम्हें (तुम्हारी सुरत को) चुम्बक की तरह अपनी तरफ खींच लेगा।
- ✧ जानति तुमहिं-तुमहिं होइ जाई।
- ✧ तुम वही हो जाओगे , तुम्हारी सुरत पारस सुरत हो जाएगी। वह जिसको छू लेगी अपने समान बना लेगी।

चेतावनी

*बिना "बोध" के भाखै ज्ञान, बोध होकर धरे ध्यान।
ज्ञानी होकर सुमिरै जग, कहैं दयाल यह तीनों ठग॥*

[1] तुम्हारे और गुरु में अंतर :-

- ✧ तुम जीव अवस्था में हो।
- ✧ गुरु पीव अवस्था में है।

[2]

- ✧ देवताओं में केवल श्री शिव जी ही "सीव" अवस्था में हैं।
- ✧ शेष सभी देवता जीव अवस्था में ही हैं , तत्व में ही हैं।

[3] "पीव" अवस्था (स्थिर प्रज्ञ अवस्था) में आने के लिए।

- ✧ जो जिसकी पूजा करता है।
 - उसी के गुण आते हैं।
 - उसी के जैसा हो जाता है।
 - अंत में उसी को प्राप्त हो जाता है। जैसे प्रेतों की पूजा करने वाले प्रेत होते हैं इत्यादि।
- ✧ जिसका ध्यान करोगे उसी के गुण आएंगे।
- ✧ हमें पीव अवस्था , परमपद अवस्था प्राप्त करने के लिए वह जैसा है हमें वैसा होना पड़ता है।
- ✧ वह परमतत्व का है अतः हम भी पांच तत्वों के पार निकलें , पांच तत्वों की पूजा न करें।
- ✧ मन , माया से बाहर निकलो ,

*तू इस मन का दास न बन।
इस मन को अपना दास बना ले। ।*
- ✧ क्रिया , कर्म से बाहर निकलो।
- ✧ ज्ञान , ध्यान के बाहर निकलो।
- ✧ तन की आँखों , मन की आँखों से न देखकर , सुरत की आँखों से देखना प्रारम्भ करो।
- ✧ तन के कान और मन के कानों से न सुनकर , सुरत के कानों से सुनना प्रारम्भ करें।
- ✧ साकार और निराकार से बाहर निकलो :-साकार तुम्हारा शरीर , निराकार तुम्हारा मन और मन के लोक हैं।

- ✧ द्वैत और अद्वैत से बाहर निकलो।
- ✧ सभी योगों से पार निकलो। वह योगातीत है।
- ✧ शरीर और मन के सभी लोकों से बाहर निकलो।
- ✧ भाव , विचारों से पार निकलो , वह भावातीत ,विचारातीत है।
- ✧ सुमिरन , ध्यान , भजन से पार निकलो । क्योंकि सुमिरन , ध्यान , भजन सब मन से होता है।
- ✧ सभी स्वरूपों , रूप , रंग , रेखा से पार निकलो।
- ✧ सभी ब्रह्माण्ड , सभी प्रकृतियाँ , सभी शरीर , सब माया है। इनसे पार निकलो।
- ✧ 85 प्रकार की वायु से पार निकलो।
- ✧ 84 प्रकार के घट पार करके उसके आगे "आत्मघट" है , उसी को जानना है।
- ✧ प्रकाश और अनहदनाद सब माया है। क्योंकि "जो बदले सो माया"।

करना क्या है :-

- ✧ अनन्य होना है :- सबको छोड़कर केवल दृष्टि और निशाना परमात्मा पर हो।
- ✧ सहज होना है :-
 - मन को स्थिर कर दो।
 - सुरत को ठहराना है।
- ✧ सन्मुख होना है :-
 - सबकी तरफ से दृष्टि हटाकर केवल उसी की तरफ हो।
- ✧ विचारातीत और भावातीत होना होता है।
- ✧ सुरत को देह से हटाकर विदेही से जोड़ना है।

पीव अवस्था क्या है:-

यह आत्मपद में स्थिर होने की अवस्था है। इसे ही स्थिर प्रज्ञ कहा गया है।

- ✧ सभी शक्ति पीठों में 84 घट रखे होते हैं , यदि उनसे पूछो यह घट क्या हैं? तो वह कहते हैं की इनमे 84 तीर्थों का जल लाकर रखा गया है।
- ✧ दिल्ली में कालिका देवी मंदिर में 84 घंटा बंधे हुए हैं
 - मिश्रित तीर्थ में होली की परिक्रमा 84 कोष की होती है। बताया जाता है 84 कोष की परिक्रमा बाहर की है।
 - अंदर की परिक्रमा केवल 5 कोश की होती है।
- ✧ 84 घट पार करके 85वां घट आत्मघट है। उसी का अध्ययन हमें करना है।
- ✧ हम तनघट और मनघट के ही 84 घटों में ही अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। और 84 पार नहीं कर पाते हैं।
- ✧ इसी आत्मघट में आत्मा और परमात्मा का अध्ययन होता है और हम पूर्ण मुक्त हो जाते हैं।
- ✧ इसी पद को "रामपद" या "सत्यपद" भी कहते हैं। पूरी जिंदगी निकल जाती है। हम उस रामपद , सत्यपद का अनुभव नहीं कर पाते हैं। मृत्यु के बाद में सब कहते चले जाते हैं -

"राम नाम सत्य है "।
- ✧ जिंदगी में आत्मघट को नहीं जान पाए। मरने के बाद में भी घट बाँध कर उसमें से पानी टपकाते हुए दिखाया जाता है इसी घट को जीवन में ही जानना है।
- ✧ हमारा उद्देश्य आत्मघट और रामपद को जानना है।

- ✧ इसी को जानने के बाद
जानति तुमहिं-तुमहिं होई जाई।
- ✧ इसी को जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है।

“जिन यह एकै जानिया , ते जानौ सब जान।”

- ✧ इसी को कहा गया है :- *“एकै साधे सब सधै।”*
- ✧ इसी को सब का मूल बताया गया है।
“जो तू सींचै मूल को, फूले फले अघाय।”
- ✧ यह आत्मघट का अध्ययन केवल मनुष्य शरीर में ही हो सकता है। इसीलिए देवताओं को भी मनुष्य रूप में ही दिखाया गया है। जबकि वह मनुष्य रूप में नहीं हैं। तुमको समझाने के लिए कि तुम मनुष्य हो उसका अध्ययन गुरु से जानकर करो।
- ✧ यह घट न शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है।
- ✧ श्री शिव जी की जटा से जो गंगा जी की धार निकलती है , इसी भागीरथी गंगा से सभी तर जाते हैं।
- ✧ इसी धार की खोज करनी है।



- ✧ इस घट को गुरु तुम्हारे में प्रकट कराता है।
- ✧ पूर्ण गुरु को खोजो और अपने अंदर यह घट प्रकट कराओ।
- ✧ धार प्रकट होते ही आप उसके सन्मुख हो जाते हो , पूर्ण हो जाते हो , मुक्त हो जाते हो, परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हो।

परमसतसंग-द्वितीय भाग

उद्देश्य:-

जानना हमे केवल राम को ही था। परन्तु हम भ्रम वश प्रकृति , ब्रह्माण्डों और देवी-देवताओं में ही फंस गए और उस राम

तक नहीं पहुंचे जो सबका मालिक एक है। उसे जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है। देवी-देवताओं की पूजा से स्वर्ग संभव है। परन्तु उस "राम" को जो केवल वही सत्य है , उसे जानने के बाद में यदि सात स्वर्ग , अपवर्ग को भी तराजू पर तौलने के लिए एक तरफ रख दिया जाये फिर भी "राम" का ही पलड़ा भारी रहेगा।

“सात स्वर्ग अपवर्ग लौ , धरी तुला एक अंग।

तूल न ताहि सकल मिलि , जो सुख लौ सत्संग।। ”

कहाँ खोजें :-

इनमें से कोई एक खोज लो , वह मिल जायेगा।

1. आठवां कमल खोजो।
2. आठवां चक्र खोज लो। देवकी का आठवां लाल ही कृष्ण क्यों था। इसी को खोजो।
3. आत्मघट खोज लो।
4. "पीव अवस्था" खोज लो।
5. तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा। सत्यनाम, सतगुरु गति चीन्हा।
पहले तीन पदों को छोड़ो , फिर चौथा पद खोज लो।
6. ग्यारहवां द्वार खोज लो।
7. सात चक्र , सात कँवल , सात पदों के पार "आठवां" खोज लो। ग्यारहवां द्वार खोज लो।
8. सात चक्र शरीर के , सात प्रकाश , सात लोक अनहदनाद के छोड़कर आठवां चक्र खोज लो।
9. 21 ब्रह्माण्ड काल के हैं उनको छोड़कर उससे आगे खोजो।

क्यों खोजें :-

उसी के जैसे होने के लिए।

✧ अज्ञानी से ज्ञानी होने के लिए :-

जो उसको जानता है केवल वही ज्ञानी है , केवल उसको ज्ञानी कहा गया है। शेष सभी को अज्ञानी बताया गया है।

सुमिरति जाहि मिटहि अज्ञाना , सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना।

✧ विवेक प्राप्त करने के लिए :-

उस राम को जो केवल वही सत्य है उसे जान लेने से विवेक वाली दृष्टि , विवेक वाली बुद्धि , विवेक वाला ज्ञान प्राप्त हो जाता है और हम कौआ से हंस बन जाते हैं। नीर-छीर विवेकी वाला गुण जीव को प्राप्त हो जाता है।

बिन सत्संग विवेक न होई , राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

✧ संसारी दुःख एवं दैहिक , दैविक , भौतिक तापों से बचने के लिए:-

दैहिक , दैविक , भौतिक तापा , राम राज्य काहू नहीं व्यापा। उस राम को जान लेने के बाद में हमारे ऊपर इनका कोई असर नहीं होता है।

चलती चक्की देखकर , दिया कबीरा रोय।

दो पाटन के बीच में , साबुत बचा न कोय ॥

जगत बीच चक्की चलै , चले दिवस और रात।

मन , माया दो पाट हैं , तामे "जीव" पिसात ॥

चलती चक्की देखकर , हंसा कमाल ठठाय।
जो किलिया को गहि रहे , कबहुँ न पीसा जाय ॥

किलिया वही "रामपद" वही सारशब्द है। केवल वही स्थिर है , वही अचल है , उसके आलावा सभी गतिमान है, सभी चल रहे हैं , सभी उसी किलिया का चक्कर लगा रहें हैं और मन और माया के दो पाटों के बीच में पीस रहे हैं। केवल उसी के सन्मुख होना है। सन्मुख होते ही उसी के जैसे हो जाओगे। वह अचल है , स्थिर है। तुम भी अचल हो जाओगे। एक बार सूर्य देव ने हलके से उस राम की तरफ केवल झांककर देखा ही था कि उनका रथ स्थिर हो गया। यह मर्म यह रहस्य किसी को मालूम नहीं ।

मास दिवस कर दिवस भा , मर्म न जाना कोई।
रथ समेत रवि थाकेउ , निशा कौन विधि होइ ॥
यह रहस्य रघुनाथ का , वेगि न जानइ कोई।
सोइ जानइ जेहि पर कृपा , रघुनायक की होइ॥

उसी के जैसे होने के लिए :-

केवल उसके सन्मुख होते ही उसके सभी गुण तुम्हारे में आ जाते हैं और तुम उसी के जैसे हो जाते हो।

जानति तुमहि-तुमहि होइ जाई।

✧ पूर्णता :- वह पूर्ण है तुम पूर्ण हो जाते हो।

✧ पूर्ण मोक्ष :-

- तुम मन , माया , आशा , तृष्णा , चित्त से पार हो जाते हो।
- सुरत , निरत थिर हो जाती है।
- सभी प्रकृतियाँ , सभी शरीरों के पार हो जाते हो।
- हम उसी के समान हो जाते हो।
- पूर्ण मोक्ष हो जाता है।

हमारे में क्या परिवर्तन होता है:-

- ✧ हम इन्द्रियातीत , मनोतीत, विचारातीत , भावातीत , मायातीत , गुणातीत , ज्ञानातीत , ध्यानातीत , तत्वों से परे , पाप-पुण्य से परे हो जाते हैं।
- ✧ जीव हंस होकर पीव अवस्था में आ जाता है।
- ✧ जीव चौथा पद , आठवां चक्र आत्मपद में स्थित हो जाता है।
- ✧ साकार-निराकार , द्वैत, अद्वैत , सभी स्वरूपों , रूप , रंग , रेखा से पार हो जाते हैं।
- ✧ जीव सभी चक्रों , सभी प्रकाशों , सभी प्रकार के अनहदनादों से पार हो जाता है।
- ✧ वह राम जो अलख है , अविनाशी है उसी के जैसे हो जाते हैं।
- ✧ हम परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।
- ✧ हम आत्मघट में स्थिर हो जाते हैं। और स्थिर प्रज्ञ हो जाते हैं।
- ✧ पूरी प्रकृति हमारे अनुरूप हो जाती है। और हमारा चक्कर लगाने लगती है, प्रकृति हमारे अनुरूप कार्य करने लगती है।

“जीव नियम के बस रहे , नियम प्रकृति अनुरूप।
प्रकृति भी जाके बस रहे , सोई कहावै भूष ॥”

❖ **यही राम :-**

सभी धर्म , सभी पंथ का , सबका मूल है एक।
आदि अनादि अखंड है , कहत दयाल विवेक ॥
पहले खोजो मूल को , कहते उसी को राम।
सुरति , निरति मन है नहीं , वहां पूर्ण विश्राम ॥

खोजने में हम गलती कहाँ करते हैं :-

- ❖ खोजना है अद्वैत में , हम खोजते हैं द्वैत में।
- ❖ खोजना है चौथे पद में , खोज रहे हैं तीसरे पद में।
- ❖ मिलेगा आत्मज्ञान से , कर रहे हैं ब्रह्मज्ञान।
- ❖ खोलना ग्यारहवां द्वार है , हम चक्रों को खोलने में लगे हैं।
- ❖ ग्यारहवां द्वार न शरीर के अंदर है , और न बाहर है।
- ❖ खोजना सद्गुरु है , खोज रहे हैं गुरु।

परमसतसंग - तृतीय भाग

1. अध्यात्म का उद्देश्य :-

- ✧ चिड़िया का उद्देश्य आकाश में उड़ना है और जीव का उद्देश्य परमात्मा को प्राप्त करना है।
- ✧ जीव को तनघट से आत्मघट में स्थित होना है। इसी को स्थिर प्रज्ञ भी कहते हैं।

2. केवल एक को ही जानना है :-

हम जहाँ जहाँ फंसे है सबको छोड़कर केवल इसी एक को ही जानना है। इसी आत्मघट को अनेक नामों से जाना जाता है जैसे - आत्मा , परमात्मा , परमपद , परमतत्व , आठवां कमल , आठवां चक्र , पीव अवस्था , चौथा पद , राधास्वामी , राम , नाम , गुरु , गोविन्द , निर्भयपद , पूर्ण , मोक्ष पद , अलख , अकह , मुक्ततत्व , अमृत , अमर , अविनाशी , सतगुरु , विदेही , सारशब्द , प्रभु , सत्यनाम , सतनाम , सत्यपद , निर्वाणपद , अचिंत्यपद , निजनाम , निजस्वरूप , अनामी , बन्दीछोर , निःशब्द , मूलज्ञान , किलिया , धुरी इत्यादि इसी एक को कहते हैं। वहां पर कोई दूसरा है ही नहीं।

3. केवल मनुष्य के शरीर में ही "आत्मघट":-

यह आत्मघट केवल मनुष्य के शरीर में ही जागृत किया जा सकता है।

इसी लिए कहा गया है - "नर समान नहीं कौनेउ देही"।

4. आत्मघट कहाँ और कैसा है:-

- ✧ यह आठवां चक्र सभी शरीरों के पार है इसीलिए इसे विदेही कहते हैं।
- ✧ न यह शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है।
- ✧ न यह गुप्त है और न यह प्रकट है।
- ✧ सब जगह व्यापक है और सबसे न्यारा भी है। किसी को स्पर्श नहीं करता है।
- ✧ सभी के सम्मुख भी है और किसी को दिखता भी नहीं है।
- ✧ इसी को ग्यारहवां द्वार भी कहते हैं, यह द्वार चोटी के स्थान पर है, इसी के बारे में कहा गया है कि इसमें कपाट बंद है और चाभी गुरु के पास है। नौ दरवाजे तो खुले हैं और ग्यारहवां दरवाजा बंद है, और गुप्त है, इसे ही गुरु से चाभी लेकर खोलना है। केवल इसी के खुलने पर ही मोक्ष, मुक्ति प्राप्त होगी।
- ✧ इसे ही सहस्त्रधार चक्र भी कहते हैं। इसके खुलने पर ही "सारशब्द" की हज़ारों धारें निकलने लगती हैं। और "सारशब्द" रूप में परमात्मा प्रकट हो जाता है, इसे ही कहा गया है कि :-

“सब घट मेरो साइयां, खाली घट न कोय।

बलिहारी वा घट की, जा घट प्रकट होय।।”

5. कैसे देखें :-

जैसे बीज के अंदर पूरा वृक्ष होता है वैसे ही यह है। इसको गुरु से भेद लेकर प्रकट करना पड़ता है।

6. कैसे प्रकट करें :-

“ उत्तमा सहजावस्था , मध्यमा ध्यान धारणा।”

केवल सहज अवस्था से वह प्रकट किया जा सकता है।

7. सहज कैसे हों :-

- ✧ अनन्य होना है।
- ✧ मन को वर्तमान में रोककर , विचारातीत , भावातीत होना है।
- ✧ सुरत को ठहराना है।
- ✧ पूर्ण सहज होना है।
- ✧ पूर्ण समर्पण में उसी की व्यापकता में लीन होना है।
- ✧ पूर्ण प्रयासरहित होना है।

8. प्रकट होने के बाद क्या करें :-

- ✧ गुरु से मिलकर सारशब्द की परख कराई जाती है।
- ✧ यदि आवाज़ बदल रही है तो यह सारशब्द नहीं है।
- ✧ जो बदले सो माया।
- ✧ यदि आवाज़ की आवृत्ति घटती , बढ़ती है तो यह सारशब्द नहीं है।
- ✧ यदि कई शब्द हैं तो भी यह माया है।
- ✧ सारशब्द , एकरस , अखंड , शब्द प्राप्त होगा उसे ही सारशब्द कहते हैं।
- ✧ गुरु से मिलकर इसकी परख करने के बाद सुरत को इसी के साथ रखा जाता है।

"लेटे , बैठे , खड़े , उताने , कहै कबीर हम वही ठिकाने ।।"

- ✧ किसी काम को करते समय सुरत को इसी में रखो।
- ✧ शरीर छोड़ने के समय भी सुरत को इसी में रखा जाता है।
- ✧ सारशब्द प्रकट होते ही , मन , माया , सुरत , निरत , चित्त सभी इसी में लय हो जाते हैं। और इसी के द्वारा संचालित होने लगते हैं।

- ✧ पूरी प्रकृति , ब्रह्माण्ड सभी इसी के आसपास चक्कर लगाते हैं और इसी की शक्ति से संचालित होते हैं। यह सब तुम्हारे अनुरूप हो जाते हैं।

"सदगुरु" , "गुरु" और "विद्वान" में अंतर

1. सदगुरु :-

सदगुरु वही है जो केवल दो का ही भेद बताते हैं।

- ✧ मन और माया।
 - ✧ आत्मा जो परम सत्य है।
- दोनों का भेद बताकर मन और माया को छुड़वा देते हैं और आत्मा को लखा देते हैं। और केवल आत्मा की ही साधना बताते हैं। उनका सत्संग भी केवल आत्मा और परमात्मा पर ही होता है।

- ✧ साधौ सदगुरु वही कहावै, दो अक्षर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै, एक लखावै, तब प्राणी निज घर को जावै।।
- ✧ दो अक्षर का भेद जो पावै, लौट के फिर न भव जल आवै।
- ✧ साधौ सदगुरु वही कहावै, जो तुमको अलख लखावै।
- ✧ तीर्थ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।
सदगुरु मिले, अनंतफल, कहैं कबीर विचार ।।

सदगुरु मन , माया और मन से सम्बंधित सभी साधनायें छुड़वा देता है।

- ✧ मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, कोटिन में है एक।।
- ✧ जिन्होंने मार मन डाला, उन्ही को सूरमा कहना।
- ✧ मन चेती नहीं होत है, प्रभु चेती तत्काल।

तुम अभी मन द्वारा संचालित हो , तुम्हे मन से हटाकर आत्मा द्वारा संचालित कर देते हैं।

2. गुरु :-

सदगुरु जिस मन को छुड़वा देता है , गुरु उसी मन की भक्ति करता है। मन को ही ब्रह्म कहकर उसी को अपना इष्ट मानता है। यह काल की ही साधना है।

- ✧ मन्त्र , मन द्वारा जाप , स्वांस द्वारा अजपा जाप , इत्यादि मन की ही साधना है।
- ✧ मन की आँखों से प्रकाश को देखना , मन के कानों से अनहदनाद सुनना यह भी मन की ही साधनायें हैं।
- ✧ गुरु तुम्हे क्रिया , कर्म करने को बताता है जबकि सदगुरु इन्हे छुड़ाता है।
- ✧ गुरु तीन लोक जो काल के हैं , उन्हीं की साधना बताता है , जबकि सदगुरु चौथे लोक की साधना बताता है।
- ✧ गुरु निराकार की साधना बताता है , जबकि सदगुरु साकार और निराकार के पार की साधना बताता है। निराकार तुम्हारा मन ही है।

3. विद्वान :-

- ✧ विद्वान किताबों में लिखी गयी बातों को ही सुनाता है।

- ✧ यह बताते हुए बूँद को समुद्र बना देता है , जबकि सदगुरु समुद्र को बूँद बनाकर तुमको लखा देता है।
- ✧ यह साकार की भक्ति , कर्मकांड , जंत्र , मन्त्र , तंत्र पर श्रद्धा , विश्वास रखता है।
- ✧ यह सुनी सुनाई बात ही सुनाता है। इसका खुद का कोई अनुभव नहीं होता।
- ✧ गीता , रामचरितमानस , उपनिषद , पुराणों, इत्यादि का वाचक ज्ञान विद्वान को होता है।

“सदगुरु मेरा सूरमा, ऐसा मारा बाण।

सारशब्द ही रह गया , पाया पद निर्वाण ।।”

राधास्वामी क्या है :-

- ✧ अंड , पिंड , ब्रह्माण्ड के पार जो चौथा पद है वही राधास्वामी पद है।
- ✧ यही कलयुग का नाम है ,
नाम रहे चौथे पद माहीं, तुम ढूंढो त्रिलोकी माही।
- ✧ ग्यारहवां द्वार से जो "सारशब्द" की धार निकलती है वही राधास्वामी है।

परमसतसंग-"सार का सार"

1. जैसी संगत बैठिये , वैसा ही फल दीन।

- कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वांति एक गुण तीन ॥
2. धार एक गुण तीन हैं, तीन अवस्था जान।
केवल एकै धार से, ज्ञान तीन पहचान ॥
 3. "तीन अवस्था, तीन गुण, तीन ज्ञान, जग माहि।
जानो इनके भेद को, इनसे परे कुछ नाहि ॥
 4. जीव, सीव और पीव है, तम, रज, सत गुण जान
तत्व, ब्रह्म, और आत्म हैं, ज्ञान भेद यह जान ॥

आत्मा अचल है, आत्मा से जो धार निकल
रही है उसे सुरत कहते हैं। यह सुरत की
धार जब :-

✧ स्थूल शरीर में होती है तब :-

अवस्था :- इस अवस्था को "जीव अवस्था" कहते हैं।

गुण :- इस गुण को "तमो गुण" कहते हैं।

ज्ञान :- इस ज्ञान को "तत्व ज्ञान" कहते हैं।

स्वरूप :- इस स्वरूप को काग रूप कहते हैं।

✧ मन में होती है तब :-

अवस्था :- इस अवस्था को "सीव अवस्था" कहते हैं।

गुण :- इस गुण को "रजो गुण" कहते हैं।

ज्ञान :- इस ज्ञान को "ब्रह्म ज्ञान" कहते हैं।

✧ आत्मघट में होती है तब :-

अवस्था :- इस अवस्था को पीव अवस्था कहते हैं।

गुण :- इस गुण को "सतगुण" कहते हैं।

ज्ञान :- इस ज्ञान को "आत्मज्ञान" कहते हैं।

स्वरूप :- इस स्वरूप को "हंस रूप" कहा जाता है।

- ✧ प्रकृति के अनुरूप कार्य :- यह धार जहाँ भी पड़ती है , वहाँ की जैसी प्रकृति होती है उसी के अनुरूप कार्य करने लगती है।

पीव अवस्था क्या है ?

जब सुरत की धार "आत्मघट" में होती है तब इसे पीव अवस्था कहते हैं।

- ✧ यह पूर्ण अवस्था है।
- ✧ यह मोक्ष अवस्था है।
- ✧ यह विदेही अवस्था है।
- ✧ यह ज्ञानी अवस्था है।
- ✧ यह विवेकी अवस्था है।
- ✧ यह दयाल अवस्था है।
- ✧ यह चौथे पद की अवस्था है।
- ✧ यह राधास्वामी अवस्था है।
- ✧ यह हंस अवस्था है।
- ✧ यह संत अवस्था है।
- ✧ यह परमसंत अवस्था है।
- ✧ यह सतगुरु अवस्था है।
- ✧ यह गोविन्द अवस्था है।
- ✧ यह राम अवस्था है।
- ✧ यह नाम अवस्था है।
- ✧ यह आत्मपद की अवस्था है।
- ✧ यह अचल अवस्था है।
- ✧ यह किलिया या धुरी अवस्था है।
- ✧ यह सर्वशक्तिमान अवस्था है।
- ✧ यह अकह अवस्था है।
- ✧ यह निजनाम अवस्था है।
- ✧ यह बंदी छोर अवस्था है।
- ✧ यह निर्भयपद अवस्था है।

- ✧ यह अलख अवस्था है।
- ✧ यह मुक्त तत्व अवस्था है।
- ✧ यह निजस्वरूप अवस्था है।
- ✧ यह अचिंत अवस्था है।
- ✧ यह अमर , अविनाशी अवस्था है।
- ✧ यह सत्यद , सत्यलोक , सतनाम अवस्था है।
- ✧ यह आदि , अनादि , अखंड अवस्था है।
- ✧ यह सभी धर्म एवं सभी पंथों की मूल अवस्था है।

सभी के पार की अवस्था :-

- ✧ यह मन माया आशा तृष्णा के पार की अवस्था है।
- ✧ यह क्रिया कर्म के पार की अवस्था है।
- ✧ यह सभी ब्रह्माण्ड और सभी प्रकृतिओं के पार की अवस्था है।
- ✧ यह सभी योगों के पार है।
- ✧ यह द्वैत , अद्वैत के पार की अवस्था है।
- ✧ यह शून्य के पार की अवस्था है।
- ✧ यह रूप , रंग , रेखा के पार की अवस्था है।
- ✧ यह भवसागर और चौरासी के पार की अवस्था है।
- ✧ यह "सात प्रकाशों और अनहदनाद " के पार की अवस्था है।

रहित अवस्था :-

रहित का अर्थ जिसकी आवश्यकता न हो।

- ✧ यह मन और माया रहित अवस्था है।
- ✧ यह आशा , तृष्णा रहित अवस्था है।
- ✧ यह क्रिया , कर्म रहित अवस्था है।
- ✧ यह इन्द्रिया रहित अवस्था है।

- ✧ यह मार्ग रहित अवस्था है।
- ✧ यह तत्व रहित अवस्था है।
- ✧ यह प्रकृति रहित अवस्था है।
- ✧ यह द्वैत , अद्वैत रहित अवस्था है।
- ✧ यह लोक रहित अवस्था है।
- ✧ यह ज्ञान , ध्यान , आधार , आकार रहित अवस्था है।

अतीत अवस्था :- पार की अवस्था

- ✧ यह इन्द्रियातीत अवस्था है।
- ✧ यह भावातीत अवस्था है।
- ✧ यह भावातीत , ज्ञानातीत , गुणातीत , ध्यानातीत , प्रणातीत , कर्मातीत अवस्था है।

पीव अवस्था कैसे प्राप्त हो :-

हमारे सहस्रधार चक्र या आठवां चक्र या आत्मघट से जो सारशब्द की धार निकलती है उसी के सन्मुख होना पीव अवस्था है। यह धार प्रकट नहीं है इसे प्रकट करना पड़ता है।

यह धार कहाँ है:-

- ✧ यह धार केवल मनुष्यों में ही प्रकट हो सकती है।
- ✧ यह धार न शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है।
- ✧ जैसे शिव जी की जटाओं से गंगा की धार निकलती है प्रकट होने पर उसी प्रकार निकलने लगती है।
- ✧ यह धार तो हमारे ही आत्मघट से निकलती है। पर हमें स्पर्श नहीं करती है।
- ✧ शरीर में छः चक्र जो जाग्रत है परन्तु सातवां और आठवां चक्र जाग्रत नहीं है , इसे प्रकट करना पड़ता है।

- ✧ हमारी चोटी के स्थान पर अंदर की तरफ को बिंदु चक्र है , और चोटी के ऊपर सहस्रधार चक्र है। इसका मुँह ऊपर की तरफ है। यह शरीर को स्पर्श नहीं करती है।
- ✧ यह दो चक्र न गुप्त हैं और न प्रकट हैं , केवल चक्र के स्थान पर ग्रंथि रूप में हैं। इसे प्रकट करना पड़ता है।
- ✧ यही आठवां चक्र को चौथापद , आत्मघट , राधास्वामी इत्यादि नामों से कहते हैं।
- ✧ इसी चक्र को जब प्रकट किया जाता है तब जो अखंड सारशब्द हो रहा है वह प्रकट होता है , उसी को अलख , अकह नामों से कहते हैं। उसे ही लखा जाता है।

वेदांत की भाषा में:-

वेदांत की भाषा में यही विराट रूप बताया गया है। नीचे से मनुष्य का ही शरीर है। ऊपर से हजारों हाथ और हजारों मुँह हैं। यही सहस्रधार चक्र से हजारों धारें निकल रही हैं। यही धारें हजारों हाथ और हजारों मुँह के रूप में दिखाया गया है इसी धार को परमात्मा की धार एवं गुरु की धार कहा गया है।

1. करनी कथनी सम करो , रहनी भी सम होय।
तीनों समता में रहें , योग कहावै सोय ॥
2. अंदर बाहर एक हो , दया भाव चित धार।
नम्र स्वभाव से हो सदा , प्रेम भाव है सार।
3. जानो आत्मज्ञान को , मुख्य यही है ज्ञान।
सभी इसी के वश रहे , यही है पद निर्वाण ॥

सत्संग - " मन से मुक्ति "

जीव दुखी क्यों :-

तुम अभी दूसरे के घर में हो , तुम्हे अपने घर जाना है। तुम्हे "तादात्म" से "एकात्म" होना है।

सो परत्र दुःख पावई , सिर धुनि धुनि पछिताय।

कालहि , कर्महि , ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाय।।

तुम अपने मन को , अपने कर्म को , अपने भाग्य को , ईश्वर को बेकार दोष लगा रहे हो।

तुम जहाँ से आये हो वहीं तुम्हे जाना है :-

तुम भजन , ध्यान , पूजा , पाठ इत्यादि में लगे हो यह तो मन की ही पूजा है। यह करने से तुम मन में ही रह जाओगे।

तुमको "आत्मपद" में जाना है क्योंकि तुम वहीं से आये हो।

आये हो तुम कहाँ से , जाना तुम्हे कहाँ ,

इतना ही केवल जान लो , बस हो गया भजन।

वहां जाने के लिए तुम्हे "मन की संगत" और बुरी

आदतें छोड़नी हैं :-

संगत बुरी संभाल लो , बस हो गया भजन।

आदत बुरी संभाल लो , बस हो गया भजन ।।

करना क्या है :-

- मन को मारना नहीं है केवल मन की तरंग को मारना है:-

मन की तरंग मार लो , बस हो गया भजन ।।

- मन को निर्मल बनाना है :-

कबिरा मन निर्मल हुआ , जैसे गंगा नीर ।

पीछे पीछे हरि फिरै , कहत कबीर कबीर ।।

- मन को शत्रु नहीं मित्र बनाना है :-

क्योंकि प्रकृति द्वारा तुम्हे वरदान स्वरूप में मिला है। संसार की जो भी वस्तु "साकार रूप" बनाकर उसे चौथे पद की परम सूक्ष्म एनर्जी में समर्पित कर दोगे। वही तुम्हे प्राप्त हो जायेगा।

● अभी मन का स्वभाव :-

दुखी , अशांत , चिंता , असंतुष्ट , भय , भवसागर , अज्ञानी , कालरूप , इस मन से जो भी संचालित होगा उसमे यही सब गुण प्रकट होंगे। यदि इसे "आत्मपद" के सम्मुख कर दिया जाये तो इसके यह सब गुण परिवर्तित होकर आत्मपद के समान गुण हो जायेंगे और यह "कागरूप" से "हंसरूप" हो जायेगा , निर्मल हो जाएगा विवेकी हो जायेगा , ज्ञानी हो जाएगा , यह हमारा मित्र हो जायेगा।

● मन से सुरत की मुक्ति :-

जैसे मन आत्मपद के सन्मुख होगा , यह आत्मा के समान हो जायेगा :-

1. सुरत मन से मुक्त हो जाएगी।
2. मन ही भवसागर है अतः भवसागर के पार हो जाओगे।
3. मन "कागरूप" से "हंसरूप" हो जायेगा।
4. मन अज्ञानी से ज्ञानी हो जायेगा।
5. पूर्ण एवं मोक्ष पद का अधिकारी हो जायेगा।
6. विवेक वाली दृष्टि प्राप्त हो जाएगी।
7. "सुरत" जो अभी तक मन के साथ में थी अपने घर "आत्मपद" में आ जाएगी।
8. सुरत स्थिर प्रज्ञ हो जाएगी।
9. सुरत आत्मा से मिलकर समुद्र बन जाएगी।
10. सुरत अपने घर आत्मपद में आ जाएगी।

सत्संग:- "अवस्था परिवर्तन"

◆ सत्संग का सार :- केवल अपनी अवस्था ही बदलनी है।

- ◆ जीव अवस्था :- तुम अभी "जीव" अवस्था में हो। यही सुदामा अवस्था है।
- ◆ पीव अवस्था :- तुमको "पीव अवस्था " में आना है , यही "हरिपद" अवस्था या "परमपद "अवस्था है।
- ◆ पीव अवस्था के दूसरे नाम :- अवस्था केवल एक , इसी के नाम है अनेक। जैसे - सारशब्द अवस्था , स्थिर प्रज्ञा अवस्था , एकात्म अवस्था , भागीरथी अवस्था , अनंत अवस्था , विराट अवस्था , विदेही अवस्था , आत्मघट अवस्था , राधास्वामी अवस्था , चौथे पद की अवस्था, इत्यादि।
- ◆ चौथे पद का स्थान मनुष्य शरीर में कहाँ है तथा इसके दूसरे नाम :-
सहस्राधार चक्र , आठवां चक्र , ग्यारहवां द्वार इत्यादि।
- ◆ चौथे पद की रचना :-
 - ✓ यह हमारी छोटी के स्थान पर यह चक्र रूप में है। इसका मुँह ऊपर की तरफ है।
 - ✓ न यह गुप्त है और न यह प्रकट है। इसे प्रकट करना पड़ता है।
 - ✓ न यह बाहर और न यह अंदर है।
 - ✓ यह किसी को भी स्पर्श नहीं करता है।
- ◆ चौथे पद की मुख्या विशेषता :-
 - ✓ जो भी इसके सन्मुख आता है वह इसी के जैसा होने लगता है।
 - ✓ केवल यही सत्य है बाकी सब नकली है।
 - ✓ सभी का आधार यही है।
 - ✓ केवल मनुष्यों में ही यह चक्र होता है। अतः केवल मनुष्यों में ही प्रकट हो सकता है।
 - ✓ जब तक प्रकट नहीं है तब तक हर जगह होते हुए भी कोई परिवर्तन नहीं कर सकता है। जबकि

स्वर्ग और नर्क में हर जगह समान रूप से व्याप्त है।

- ✓ प्रकट होते ही पूर्ण परिवर्तन स्वतः होने लगता है।
- ✓ अपने सामान बना लेता है।
- ✓ आप उसी परमपद , हरिपद में पहुँच जाते हो।

◆ चौथे लोक में पहुंचने पर अपने आप प्राप्त होते हैं :-

परमशांति , परमानन्द , परमलोक , परमपद , परमपुरुष , परमज्ञान , परमविद्या , परमयोग , परमगुरु , परमात्मा , इत्यादि।

◆ पार की अवस्था क्यों है :-

क्योंकि जितना जानते हो वह सब मन के क्षेत्र में आता है। जहाँ से मन का क्षेत्र समाप्त होता है उसके पार से आत्मा का क्षेत्र है।

◆ मन के क्षेत्र से सम्बंधित निम्न हैं :-

- ✓ द्वैत और अद्वैत के पार।
- ✓ भवसागर के पार।
- ✓ प्रकृति और ब्रह्माण्डों के पार।
- ✓ शून्य से पार।
- ✓ मन और माया से पार।
- ✓ सभी तत्वों से पार।
- ✓ पिंड , अंड , ब्रह्माण्डों से पार।
- ✓ साकार , निराकार से पार।
- ✓ सभी लोकों से पार।
- ✓ सभी स्वरूपों , रूप रंग , रेखा से पार।
- ✓ स्थूल , सूक्ष्म , कारण , महाकारण , कैवल्य , हंस शरीरों के पार।

◆ न्यारा है :-

पूजा पाठ , क्रिया कर्म , ज्ञान ध्यान , भजन इत्यादि।

◆ क्यों न्यारा है :-

क्योंकि यह सब :-

- धार्मिक बनने में आता है।
- यह सब मन के क्षेत्र में आता है।

◆ धार्मिक :-

- ✓ इसमें पूजा पाठ क्रिया कर्म , ज्ञान-ध्यान , मंदिर , तीर्थ , व्रत , शास्त्र , उपनिषद , गीता , रामायण , इत्यादि का अध्ययन आता है।
- ✓ शास्त्रों के अनुसार धर्म और कर्म करना बताया जाता है।
- ✓ देवी-देवताओं की पूजा , हवन , यज्ञ , जप-तप , इत्यादि से पुण्य अर्जित करना।
- ✓ पुण्य और कर्मफल के अनुसार अगला जन्म पाना बताया जाता है।

◆ आध्यात्मिक :-

- ✓ इसमें केवल आत्मा का अध्ययन किया जाता है।
- ✓ आत्मपद में स्थित होना , एकात्म होना , स्थिर प्रज्ञ होना , विदेही अवस्था प्राप्त करना है।
- ✓ यह पूर्ण अवस्था है, मोक्ष और मुक्ति प्राप्त होती है। अगला जन्म नहीं होता है।
- ✓ यही अवस्था सबसे श्रेष्ठ और उच्च है।

◆ धर्म न कौनौ सत्य समाना :-

असली धर्म सत्य सनातन धर्म ही है। केवल आत्मा ही सत्य है , आत्मा ही सनातन है। इसीलिए आत्मा को जानना ही हमारा मुख्य धर्म है।

सतसंग:-आत्मा की भक्ति

सभी शास्त्रों में जिस एक चीज को मानव कल्याण के लिए सबसे जरूरी बताया गया है वह एकमात्र "आत्मा" की "भक्ति" ही है।

यह भक्ति तीन चरणों में होती है:-

● प्रथम चरण मे:-

आत्मा को प्रकट कराना पड़ता है यह सद्गुरु कराता है।
सब घट मेरो सांझ्याँ खाली घट न कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रकट होय ॥

● दूसरे चरण में:- आत्मा के सम्मुख होना पड़ता है।
सम्मुख होने पर:

1. मन निर्मल हो जाता है।
2. मन आत्मा को समर्पित हो जाता है।
3. मन आत्मा द्वारा संचालित हो जाता है।
4. जीव को मन से मुक्ति मिल जाती है।
5. जीव मन से मुक्त होते ही आत्मा से मिलकर जीव अवस्था से पीव अवस्था में आ जाता है।
6. मन ही भवसागर है भवसागर पार हो जाता है।
7. चौरासी पार होकर जीव तर जाता है।
8. मन तुम्हारा मित्र बन जाता है मन के संचालक तुम बन जाते हो।
9. मन अज्ञानी से ज्ञानी विवेकी, हंस, परमहंस बन जाता है।
10. जीव माया के तीन लोकों को पार करके चौथे लोक या चौथे पद या पिंड, अंड, ब्रह्मांड के पार पहुंच जाता है।
11. चित्त की व्रत्तियों का निरोध हो जाता है।
12. पूर्ण अवस्था, परमपद अवस्था, हरिपद अवस्था, मोक्ष अवस्था प्राप्त हो जाती है।
13. विवेक वाली दृष्टि प्राप्त हो जाती है।
14. तदात्म से एकात्म अवस्था प्राप्त हो जाती है।
15. स्थिर प्रज्ञा अवस्था प्राप्त हो जाती है।
16. सत्य प्रकट होने पर, जैसे सूर्य के प्रकट होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है वैसे ही असत्य स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

तीसरे चरण में:-

(I) हम परम सूक्ष्मतम् एनर्जी से जुड़ जाते हैं और वैसे ही हो जाते हैं।

जानति तुमहि, तुमहि होइ जाई।

(II) तीनों लोकों की जो भी वस्तु चाहते हो उसका स्थूलरूप इस एनर्जी में कर दो वह वस्तु तुम्हें प्राप्त हो जाएगी।

(III) तीनों लोक का संचालन इसी एनर्जी से होता है।

आत्मा की भक्ति की आवश्यकता:-

1. केवल यही भक्ति अध्यात्मिक है शेष सभी धार्मिक हैं।
2. हम परम सूक्ष्मतम् एनर्जी से जुड़ जाते हैं तथा उसी के द्वारा संचालित होने लगते हैं।
3. मन, माया, आशा, तृष्णा समाप्त हो जाते हैं।
4. तीन लोक माया के हैं इन से पार हो जाते हैं।
5. मन काग रूप से हंस रूप हो जाता है।
6. इंद्रियां विवेकी तथा दृष्टि विवेक वाली प्राप्त हो जाती है।
7. हम जीव अवस्था से पीव अवस्था में आ जाते हैं।
8. भवसागर यह मन ही है हम भवसागर तथा चौरासी से पार हो जाते हैं।
9. परमानंद, परमशांति, परमपद, पूर्णपद, गुरुपद, गोविंदपद सब हमें प्राप्त हो जाते हैं।
10. प्रकृति के नियमों से तथा प्रकृति से, ब्रह्मांडों से पार हो जाते हैं।
11. तीन तापों का असर नहीं होता है।
12. कैवल्य मुक्ति प्राप्त हो जाती हैं।
13. सभी शरीरों से पार हो जाते हैं।
14. निज स्वरूप में स्थित हो जाते हैं।
15. स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है।
16. सत्य प्रकट हो जाता है असत्य नष्ट हो जाता है।

17. हमें विचारातीत और भावातीत नहीं होना पड़ता है स्वतः ही हमें विचारातीत और भावातीत अवस्था प्राप्त हो जाती है।
18. अज्ञानी से ज्ञानी अवस्था प्राप्त हो जाती है।
19. हम परमात्मा से एक हो जाते हैं।
20. मनुष्य के सभी उद्देश्यों की पूर्ति होने लगती है।

आत्मा की भक्ति में:-

- (1) इंद्रियों का, मन का, सुरत का किसी भी शरीर जैसे स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण - शरीर, महाकारण शरीर इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- (2) ध्यान, अनहदनाद, क्रिया, कर्म इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- (3) कोई भी जाप, अजपा इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आत्मा की भक्ति से हमारे में क्या परिवर्तन होता है।

- हम जीव अवस्था से पीव अवस्था में आ जाते हैं।
- हम तन घट से आत्मघट में आ जाते हैं।
- जो हम मन द्वारा संचालित थे, वह मन से मुक्त होकर आत्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।
- जीव, मन से मुक्त हो जाता है इसी को मुक्ती कहते हैं। मन ही काल है हम काल के देश से आत्मा के दयाल देश में पहुंच जाते हैं।
- मन ही भवसागर है, हम भवसागर से पार हो जाते हैं।

“आत्मबोध माला”

हमारा इष्ट परमात्मा कैसा है:-

वस्तु अगोचर खोजिए , पिंड अंड के पार।

"सारशब्द" वहां हो रहा, सो है इष्ट हमार।।

अगोचर वस्तु ही क्यों खोजें:- क्योंकि :-

गो,गोचर जहां तक मन जाई सो सब माया जानेव भाई।।

क्या पिंड,अंड,ब्रह्मांड इन तीनों लोकों की रचना नकली है:- हाँ

आदिमाया कीन्हीं चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखायी।

अविगत रचना रचीअंड माहीं, ता का प्रतिबिंब डारा है।।

तीन लोक और मन माया से पार कैसे निकले:-

शब्द विहंगम चाल हमारी, कहे कबीर सतगुरु दर्ई तारी।

खुले कपाट,शब्द झनकारी,पिंड;अंड के पार सो देश हमारा है

कपाट कैसे खूलें "भवसागर" कैसे पार हो,

"मन और माया" कैसे छूटे:-

आत्मज्ञान है सार, बूझौ संत विवेक करि।

तुरत होव भव पार, मन माया को छोड़कर।।

आत्म ज्ञान कैसे प्राप्त हो:-

तीन छोड़ चौथा पद पावो, सार शब्द के सम्मुख आवो।

दसवां द्वार यही है भाई, सहस्रधाधर चक्र जब पाई ॥।

आत्म घट यहीं है जानो, भागीरथी शिव की पहिचानो।

"पीव अवस्था" पावो जबही, जीव मुक्त है जावे तबही।।

मुक्त तो जीव अवस्था से होना है:-

"जीव अवस्था" से मुक्त है, पीव अवस्था पाव।

धार 'सुरति' की उलटि कर, आत्म घट में जाव।।

पीव अवस्था क्या है:-

सुरति उलटि शब्दे लखौं , आत्म घट में जाय।
 "पीव अवस्था" यही है , तुरत एक है जाय।।
 धार सुरति की पलटि कर , आत्म घट में जाव।।
 सार शब्द जो हो रहा , उसमें तुरत समाव ।।

'सारशब्द'में समाने के बाद क्या करें:-

सुरति इसी में राखि कर , करो सभी तुम काम।
 सत्य यही है , अलख है , यही राम यही नाम।।

सभी के परे, सभी का मूल, सभी का सार, तथा निर्वाण पद भी यही है:-

यही सभी के परे है , मूल यही है ज्ञान।
 सार सभी का यही है , यही है पद निर्वाण।।

राधा स्वामी , पीव अवस्था , भव सागर के पार की अवस्था भी यही है:-

राधास्वामी यही है, यही अवस्था पीव ।
 भवसागर के पार है , सभी मुक्त हो जीव।।

निज स्वरूप , निज नाम , मुक्त तत्व , राम और नाम भी यही है:-

निजस्वरूप , निजनाम है , मुक्त तत्व है जान।
 राम नाम भी यही है, यही है आत्म ज्ञान।।

सत्य पद , अचल पद , राम पद , सभी पदों का सार भी यही हैं।

केवल यही तो सत्य है , बाकी सभी असार ।
यही अचलपद, रामपद , सभी पदों का सार ।।

कपाट कैसे खुलें , सार शब्द प्रकट कैसे हो:-

पूर्ण प्रयास रहित होकर तुम , पूर्ण सहज हो जावो।
मन हो शून्य , सुरत हो स्थिर , सार शब्द को पावो ।।

कैसे पहचाने सारशब्द को असली है या माया :-

शब्द , अखंड , अपार , एक रस , आत्म घट में होई।
"सारशब्द" अनहद से न्यारा , परखे बिरला कोई ।।

नौ द्वार संसार के हैं , दसवां द्वार केवल परमात्मा को जानने के लिए है।

नौ द्वारे संसार के मानो , दसवां द्वार परमात्मा जानो।
जैसे कानों के द्वार से सुनने का काम , आँखों के द्वार से देखने का काम होता है वैसे ही दसवें द्वार से परमात्मा को जाना जाता है।

सतसंग-"श्री सारशब्द"

1) यदि पूरे अध्यात्म को एक शब्द में कहना हो तो वह शब्द है एकात्म होना।

एकात्म होने पर :-

- इन्द्रियां विवेकी।

- मन निर्मल, हंस रूप।
- सुरत स्थिर।
- निरत स्थिर।
- चित्त लय हो जाता है।

2) कबिरा मन निर्मल हुआ , जैसे गंगा नीर ।

पीछे पीछे हरि फिरें , कहत कबीर कबीर ॥

3) एकात्म होना क्या है :-

हमारे आत्मघट में जो "सारशब्द" हो रहा है , उससे जो धार "सुरत" रूप में निकल कर "तनघट" में पड़ रही है उसे ही पलट कर "आत्मघट" की तरफ या "सारशब्द" के सन्मुख कर देना है। यह सुरत की धार जैसे ही सारशब्द के सन्मुख होगी "सारशब्द" चुम्बक की तरह इस धार को अपनी ओर खींच लेगा और सुरत सारशब्द में समाकर एक हो जायेगी। यहां पर दो नहीं रह सकते।

इसे ही एकात्म होना कहते हैं।

सुरति उलटि शब्दै लखौ आत्मघट में जाय।

"पीवअवस्था" यही है , तुरत एक है जाय ॥

4) अध्यात्म का मूलमन्त्र :-

मूलमन्त्र एकात्म है , सारशब्द निजनाम।

आदि अक्षर भी यही है , आदि नाम , धुरधाम ॥

"पीवअवस्था" यही है , यही विदेही जान।

"चौथापद" भी यही है , मूल इसी को मान ॥

5) भवसागर पार होना:-

मूल मन्त्र सतनाम है , बाकी सभी असार।

"सारशब्द" निजनाम है , इसी से भव हो पार ॥

आदि अक्षर जिभ्या ते न्यारा , ताहि सुमिर तुम उतरो पारा ॥

6) सतलोक क्या है , कैसा है :-

लोक अलोक शब्द है भाई , जिन जाना तिन संसय जाई ॥

7)सतगुरु क्या है :-

शब्द रूप है गुरु हमारा , तन से न्यारा मन से प्यारा।

8)नाम क्या है :-

आदि नाम सतनाम है , सारशब्द को जान।
मूल यही है , सार है , इसको लो पहिचान ॥

9)निजस्वरूप क्या है :-

"सारशब्द" निज रूप हमारा , जानि लेउ सोइ जाननि हारा।

10)"सारशब्द" गुरु और शिष्य "सुरत" में संवाद :-

मै तो देखूं तुझ को , तू दीखे कहिं और।
लानत ऐसी सुरत को , पकडे तन , मन , ठौर॥

11)एकात्म कैसे हो :-

न कहिं आना , न कहिं जाना आपहिं में आप समाना।
शब्द है गुरु , सुरत है चेला , मिले परस्पर भया अकेला।
"पीव अवस्था " यही है , यही तो है एकात्म ,
सुरत शब्द से मिल गयी पूर्ण हुआ सब काम। "

12)सारशब्द प्रकट कैसे हो :-

पूर्ण प्रयासरहित होकर तुम , पूर्ण सहज हो जावो।
मन हो शून्य सुरत हो स्थिर , "सारशब्द" को पावो॥

13)मन शून्य और सुरत स्थिर क्यों हो :-

- (i) "मन" का स्रोत शून्य है , मन शून्य से बना है , इसीलिए इसका मूल शून्य है।
- (ii) "सुरत" का स्रोत अचल पद , स्थिरपद सारशब्द है , इसीलिए इसको स्थिर होना है।

14) "सारशब्द" और "माया" वाले शब्द में अंतर :-

जो बदले सो माया संतो।

15) सारशब्द प्रकट होने के बाद क्या होता है:-

- (i) केवल असत्य ही छिपता है।
- (ii) सत्य के प्रकट होने पर असत्य स्वयं ही समाप्त हो जाता है।

16) श्री "सारशब्द" महिमा :-

आधार सभी का यही है, अलख, अमर, अविनाशी।
 सभी इसी से चल रहे, चौथे पद का वासी।।
 सार यही है, मूल है, अचल, अकर्ता एक।
 सत्य यही है, पूर्ण है, सबका मालिक एक।।
 सत्यनाम, सत्पुरुष है, यही है पद निर्वाण।
 केवल इसी को जान लो यही है आत्मज्ञान।।

"सारशब्द"

सारशब्द तो अचल है संतो, उसको तुम पहचानो।
 चाल विहंगम सुरत से पहुंचो, उसी में आन समाओ।
 यही रामपद यही आत्मपद, गुरूपद इसी को जानो।
 राधास्वामी इसी को कहते, पहले इसी को जानो।
 तन घट छोड़ो, मन घट छोड़ो, आत्म घट पहचानो।

अविनाशी है, अमर, अखंडित, परमतत्व है जानो।
 नाम विदेही इसी को कहते, केवल इसी को जानो।
 परमतत्व का परममुक्त पद, निर्भय पद है जानो।
 सबका मालिक एक यही है, सन्मुख है पहचानो।
 मन माया और तत्व रहित है, अलख इसी को जानो।
 आशा, तृष्णा देह रहित है, आतम इसी को जानो।
 रूप, रंग, आकार से न्यारा, गुणातीत है जानो।
 ज्ञान, ध्यान, आधार, अगोचर इससे न्यारा जानो।
 गुरु रहित पद, क्रिया रहित पद, द्वैत, अद्वैत न जानो।
 प्राणातीत, सहज, सम्मुखता, है अनन्य तुम जानो।
 जाप, अजाप, अनहद को छोड़ो, तीन लोक बिसराओ।
 सभी ब्रह्माण्ड, सभी प्रकृतियाँ, पिंड, अंड से न्यारो।
 भाव, विचार और सुरत, निरत को सहजे है ठहराओ।
 मन को मार चित्त को त्यागो, चौथे पद में आवो।
 आतम जानि, परमातम जानो, जीवन सफल बनावो।

"माया"

जो बदले सो "माया" संतो, जो बदले सो माया।
 सभी ब्रह्माण्ड, सभी प्रकृतियाँ, लोक तीन है माया संतों।
 अंड, पिंड, ब्रह्माण्ड है माया, "सुरत-निरत" सब माया संतो।
 जाप, अजाप अनहद है माया, क्रिया कर्म सब माया संतो।
 भाव, विचार, शरीर है माया, मन और चित्त सब माया संतो।
 रूप, रंग, आकार है माया, पांच प्राण है माया संतो।

"जीव" अवस्था से "पीव" अवस्था में आना

"जीव" तुम "पीव" अवस्था में आवो।
 माया के संग रहते रहते, जीवन अपन गंवायो।
 दुःख और कष्ट बहुत तुम भोगे, प्रभु को क्यों बिसरायो।
 माया छोड़ि प्रभु को पकड़ो, जीवन सफल बनावो।
 पूर्ण मुक्त सदा से खुद हो, भ्रम वस् रह्यो भुलायो।
 कोई नहीं पकड़ा है तुम को, तुम ही पकड़े धायो।

अबहुं चेत, हेत कर गुरु से, नहि तौ फिर पछितायो।
 माया छोड़ि मुक्त है जावो, "आत्मपद" में आवो।
 तन घट छोड़ो, मन घट छोड़ो, आत्म घट में जावो।
 यही "परमपद" सबका मालिक, पूर्ण सहज है पावो।

मन और देह को सम करो, सत्य का पकड़ो द्वार।
 " पांच तत्व " के परे हैं, शब्द वहीं है सार ॥
 कृपा बिना सतगुरु नहीं, बिन सतगुरु नहीं बोध।
 बिना बोध नहीं आत्मा, बिन आत्म नहि मोक्ष॥

आठवां कमल, आत्म घट खोजो, चक्र आठवां जानों।
 पीव अवस्था इसी को कहते, चौथा पद है जानो ॥
 यही राम है, यही नाम है, गुरु, गोविंद है जानो ।
 न यह अंदर, न यह बाहर, गुरु से मिल पहचानो॥
 व्यापक सर्व, सर्व से न्यारा, अलख, अगम है जानो।
 नहि वह गुप्त, नहि वह प्रकट, पूर्ण अकर्ता जानो।
 है सन्मुख पर दीखत नाही, भेद गुरु से जानो ।
 "सारशब्द" वह पूर्ण मुक्ति पद, सन्मुख है पहिचानो॥

वैराग्य क्या है :-

अंतः जगत और बाह्य जगत, दोनो से द्रष्टि को मोड़।
 केवल आत्म बोध से, खुद से खुद को जोड़।

परमात्मा की खोज

कौन कहता प्रभु जी है मिलते नहीं,
 रास्ता सत्य का, खोज पाते नहीं।
 तुम क्रिया और कर्म में हो उलझे पड़े,
 जब भजन, ध्यान भी उसको पाते नहीं।
 पोथियों की तो तुम आरती कर रहे,
 इन्द्रियातीत उसको बताते रहे।
 भाव, मन, चित्त भी उसको पाते नहीं।

योग से भी नहीं , भोग से भी नहीं।
 ध्यान से भी नहीं , ज्ञान से भी नहीं।
 यज्ञ से भी नहीं , बुद्धि से भी नहीं।
 देह में भी नहीं , तत्व में भी नहीं।
 कथनी , करनी और रहनी में है अंतर बहुत।
 मन , वचन , कर्म से दूढ़ते फिर रहे।
 बुद्धि , जप , तप तो भी उसको पाते नहीं।
 द्वैत , अद्वैत में भी रहे दूँढ तुम।
 न वो साकार में , न निराकार में।
 इससे आगे बढ़ो , सत्य खुद ही मिले।
 सत्य का भेद जानो , समर्पण करो।
 पहले दूढो गुरु पूर्ण , सतगुरु हो जो।
 फिर होकर अनन्य , तुम सहज हो सदा।
 उसके सम्मुख सदा होकर रहने लगे।
 ऐसे खोजो तुरत तुमको मिल जायेगा।
 मन , सुरत , चित्त भी उसमे मिल जायेगा।
 पूर्ण होकर सदा , उसके सम्मुख रहो।
 सुध उसी की रहे , तुम उसी के रहो।।

सत्य, मिथ्या, असत्य और माया में अंतर :-

सत्य :-

- जिसमे कभी भी कोई परिवर्तन नहीं होता।
- जैसे पहले था , वैसा अब भी है और आगे वैसा ही रहेगा।
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों से , मन से , बुद्धि से नहीं हो सकता है।
- केवल आत्मा ही सत्य है और कोई नहीं।

मिथ्या :-

- जो सत्य भी नहीं है और असत्य भी नहीं है।
- सदैव परिवर्तन होता रहता है।
- हमारे लिए उपयोगी है।
- जिसका अनुभव , शब्द , स्पर्श , रूप , रस , गंध के रूप में करते हैं।

असत्य:-

- जो बिलकुल झूठ है।
- है रस्सी , भ्रम वश वह हमें साँप दिखाई पड़ती है।

माया:-

- जिसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है।
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों से , मन से , बुद्धि से हो सकता है वह सभी माया की श्रेणी में आता है।
- जिसमें रूप , रंग , आकार , इत्यादि है , सब माया है।
- गो गोचर जहाँ लगी मन जाई , सो सब माया जानेउ भाई।

“ब्रह्मज्ञान” और “आत्मज्ञान” में अंतर

ब्रह्मज्ञान:-

- ✧ यह निराकार का ज्ञान है , शरीर के अंदर का ज्ञान है , मन की भक्ति है , मन ही ब्रह्म है।
- ✧ इसमें मनघट के सोपानों का अध्ययन करते हैं।
- ✧ इसमें सोपानों के प्रकाश और अनहदनाद और सुरत-शब्द योग की साधना की जाती है। ध्यान को किया जाता है।

- ✧ इसमें सात शरीरों जैसे:- स्थूलशरीर , सूक्ष्मशरीर , कारणशरीर , महाकारण शरीर , कैवल्य शरीर और हंस शरीरों का अध्ययन किया जाता है और इनको पार किया जाता है।
- ✧ इसमें मन के लोकों का अध्ययन किया जाता है।
- ✧ इसमें सीव अवस्था तक पहुँच सकते हैं। इसमें मोक्ष नहीं होता है , केवल मन के स्तर ही पार होकर मन अति सूक्ष्म हो जाता है। यह मन की साधना है।
- ✧ यह द्वैत का ज्ञान है , यहाँ पर हर वस्तु दो है।
जैसे :- सीता-राम , सिया-राम , लाभ-हानि , जीवन-मरण इत्यादि। यह द्वैत का लोक है।
- ✧ ब्रह्माण्ड की रचना हुई है , इसमें कई लोक हैं , सभी लोक अलग-अलग हैं। यह अखंड नहीं है।
- ✧ इसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है।
- ✧ इसमें गुरु होता है , गुरु प्रकाश प्रकट कराता है , तीसरी आँख और तीसरा कान गुरु खुलवाता है , तीसरी आँख से प्रकाश देखते हैं , तीसरे कान से अनहदनाद की धुनें सुनते हैं।
- ✧ इसी प्रकाश को खुदा का नूर कहते हैं और कहते हैं कि खुदा नूरानी है।
- ✧ यह तीन लोक में आता है , तीन लोक माया के हैं , इनका मालिक मन है , मन को ही काल कहा गया है।
- ✧ इसमें न मन मरता है और न आशा-तृष्णा मरती है और न माया मरती है। हम पूर्ण नहीं हो पाते हैं , हमें विवेक प्राप्त नहीं होता है , हमें ज्ञान प्राप्त नहीं होता है , हम अज्ञानी की ही श्रेणी में ही रहते हैं।
- ✧ इसमें हम मन द्वारा संचालित रहते हैं।

आत्मज्ञान:-

- ✧ यह अपरोक्ष ज्ञान है , इसमें आत्मा द्वारा ही आत्मा की भक्ति की जाती है। वहां पर दूसरा कोई भी नहीं है।
- ✧ यह आत्मघट की भक्ति है , यह घट न शरीर के अंदर है और न शरीर के बाहर है , और न हमे स्पर्श करता है।
- ✧ आत्मघट में , कोई शरीर , कोई प्रकृति , कोई लोक , कोई ब्रह्माण्ड इत्यादि कुछ भी नहीं है , यह निर्वाण पद है।
- ✧ आत्मबोध होने के बाद कोई साधना , ध्यान इत्यादि नहीं किया जाता है।
- ✧ यह अवस्था पीव अवस्था है , पूर्णपद है , मोक्ष पद है , गुरु पद है , गोविन्द पद है।
- ✧ यह अद्वैत है , वहां पर कोई दूसरा नहीं है। जैसे परमशान्ति , परमआनंद , परमसुख इत्यादि।
- ✧ इसमें सुरत-शब्द दो नहीं है , इसमें केवल आत्मा द्वारा ही आत्मा की भक्ति है , आत्मा आदि है , अनादि है , अखंड है।
- ✧ यह अचलपद है , कोई गति नहीं है , कोई परिवर्तन नहीं है , यही किलिया है , यही धुरी है यही सत्य है , यही सनातन है।
- ✧ इसमें सद्गुरु होता है। सद्गुरु सारशब्द प्रकट कराता है। इसी को कहा गया है की कोई भी इबादत करने के योग्य नहीं है सिवा उस अल्लाह के।
- ✧ यह ज्ञानी की श्रेणी में आता है , पूर्णज्ञान , पूर्ण विवेक प्राप्त हो जाता है। इसी को कहा गया है कि ,
सुमिरति जाहि मिटहि अज्ञाना , सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना।
- ✧ यह चौथा लोक है इसे जानने से हम वही हो जाते हैं।
जानति तुमहिं तुमहिं होई जाई।
- ✧ यह गुरुपद है , गोविंदपद है , हम परमात्ममुखी हो जाते हैं।
- ✧ मन , माया , आशा , तृष्णा , सब मर जाते हैं , चित्त लय हो जाता है।
- ✧ हम परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।

"पहिचान- राधास्वामी"

अरे तू कर उसकी पहिचान ।
 सब का मालिक एक वही है, उसी एक को पहले जान ।
 वही राम है, वही नाम है, वहीं है सत गुरु और सतनाम ।
 वही विदेही, वही आत्मपद, वही है पूर्ण पद, निर्वाण ।
 वहीं गुरु है, वहीं मोक्ष पद, वही अचलपद उसको जान ।
 राधास्वामी उसी को कहते, केवल उसको ही तू जान ।
 बन्दी छोर , निः अक्षर है वह, वही परमपद उसको जान ।
 चक्र, द्वार नौ, प्रकृति को छोड़ो, लोक, ब्रह्माण्ड सब मिथ्या जान ।
 पाँच तत्व के परे मुक्त पद, किलिया, धुरी वही है जान ।
 अनहद नाद, नूर को छोड़ो, इन सब को तू माया जान ।
 जाप, अजाप, ध्यान सब मन के, मन ही काल है, छोड़ो जान ।
 अण्ड, पिंड, ब्रह्माण्ड को छोड़ो, तीन लोक है माया जान ।
 तीन लोक क्यों भटक रहा है, भ्रम वस होकर तू नादान ।
 तीन लोक तो माया के हैं, इनका मालिक काल को जान ।
 चौधे लोक को खोजो पहले , ग्यारहवां द्वार वही है जान ।
 नौ द्वारे संसार के समझो, ग्यारहवां द्वार से उसको जान ।
 द्वैत छोड़ि अद्वैत को पकड़ो, द्वैत लोक है माया जान ।
 तनघट छोड़ो, मनघट छोड़ो, केवल आत्मघट पहिचान ।
 न यह अन्दर, न यह बाहर, सद्गुरु खोजो, लो पहिचान ।
 न यह गुप्त , नही यह प्रकट , भागीरथी धार है जान ।
 व्यापक सर्व, सर्व से न्यारा, सबसे अलग वही है जान ।
 सुरत, निरत, मन है वहाँ नाही, एक अकेला वही है जान ।
 जीव अवस्था में क्यों भटके, पीव अवस्था को तू जान ।
 यही अवस्था सबसे ऊपर सतगुरु पद है, इसको जान ।
 इसे जानि कुछ शेष न रहता, सबको छोड़ इसी को जान ।
 हो अनन्य तुम खोजो उसको सहज समर्पण से पहिचान ।

अभी विमुख हो, हो जावो सन्मुख, भेद गुरु से उसका जान ।
है सन्मुख पर दीखत नाही, गुरु से मिलकर लो पहचान ।
उसको जानि , वहीं ही जावो, तुम हो वही, स्वयं को जानि ।
राधास्वामी स्वयं तुम्ही हो, खुद से खुद को लो पहिचान ।
धार शब्द की प्रकट हो रही, आतम घट मे उसको जान ।
राधास्वामी यही धार है, यही नाम है इसको जान ।
पूर्ण सहज हो, सुरत हो स्थिर, सन्मुख होकर उसको जान ।।

